श्री अनुराग सिंह ठाकुर : सभापति महोदय, अगर scheduled commercial banks का देखें तो NPA 11.18 परसेंट से कम होकर 7.49 परसेंट हुआ है।

श्री सभापति : ठीक है। Question Hour is over.

[Answers to Starred and Unstarred Questions (Both in English and Hindi) are available as Part-I to this Debate, published electronically on the Rajya Sabha website under the link https://rajyasabha.nic.in/Debates/OfficialDebatesDateWise]

FAREWELL TO THE RETIRING MEMBERS

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, today, we bid farewell to four of our colleagues from the Union Territory of Jammu and Kashmir, *namely,* Mir Mohammad Fayaz and Shri Shamsher Singh Manhas, who are retiring on 10th of February, and Shri Ghulam Nabi Azad and Shri Nazir Ahmed Laway who will retire on the 15th of February, 2021.

Hon. Members, retirement from this august House only means taking leave from the House and it only marks a new beginning in the service of the people of their respective areas and the country. As such, retirement is only a comma and not a break or even a full stop in the chosen path of serving the nation. The life after retirement from this august House offers immense opportunities to fulfill the mission of serving the country.

I am sure the retiring Members are leaving the House with a sense of fulfillment and contentment, having discharged their responsibility to the best of their abilities and convictions.

We bid farewell to the Leader of Opposition, Ghulam Nabi Azadji with a heavy heart. He has been a voice of sanity in the nation's public life for the last few decades, having made significant contribution both in the Government and in the Opposition. He has served as a member of this august House for as many as 28 years and is one of the veterans of this House.

Shri Azad has been rightly honoured with the Outstanding Parliamentarian Award for the year 2015. As a Member of both the Houses of Parliament, Shri Azad conducted himself in an exemplary manner and has been a role model for the first time Members. He speaks softly, but conveys his point of view effectively, which should be the way.

During the last three years as the Chairman of this august House, I have benefited richly from the inputs and the wise counsel of Shri Azad in resolving various

difficult situations. As a Chairman, I will be missing the services of Azadji.

Mir Mohammad Fayaz, Shri Shamsher Singh Manhas and Shri Nazir Ahmed Laway have also contributed to the deliberations of the House by raising issues of regional and national importance from time to time and as Members of various Parliamentary Committees. They also used to take opportunities, as and when they are given, to contribute to the debates about their respective States as they hail from a sensitive Union Territory of Jammu and Kashmir and Union Territory of Ladakh. They always represented the will of the people in their own way to bring to the attention of this august House.

I place on record my appreciation for the courtesy, consideration and cooperation extended to the Chair by the retiring Members.

I hope that the retiring Members will continue to serve the people in different capacities with the same zeal, enthusiasm, vigour and spirit of service which they have exhibited in this House. You are all coolly retiring, but not tired from offering public service. So, please continue with your services in a manner that will really impress upon the people and add dignity and decorum to the public life in our country.

As I told you, I don't have words to express about the absence of Shri Ghulam Nabi Azad. We are already deprived, permanently, of service of two of our colleagues — Shrimati Sushma Swaraj and Shri Arun Jaitley. God has been unkind to them. And, now, even temporarily missing Shri Ghulam Nabi Azad from this House will definitely be painful for all of us. We hope all the retiring Members, including Shri Ghulam Nabi, will be able to come back.

I wish all the retiring Members good health, happiness and many more years of service to the nation. Now, the hon. Prime Minister.

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी): आदरणीय सभापति जी, आज इस सदन की शोभा बढ़ाने वाले, सदन में जीवंतता लाने वाले और सदन के माध्यम से जन-सेवा में रत ऐसे हमारे चार साथी उनका कार्यकाल पूर्ण होने के कारण नए कार्य की ओर कदम रख रहे हैं। श्रीमान् गुलाम नबी आज़ाद जी, श्रीमान् शमशेर सिंह जी, मीर मोहम्मद फ़ैयाज जी और नज़ीर अहमद जी, आप चारों महानुभावों को इस सदन की शोभा बढ़ाने के लिए; आपके अनुभव का, आपके ज्ञान का सदन को और देश को लाभ देने के लिए और अपने क्षेत्र की समस्याओं के समाधान के लिए आपने जो कुछ भी योगदान किया है, उसके लिए मैं सबसे पहले तो आपका धन्यवाद करता हूँ।

मीर मोहम्मद जी और नज़ीर अहमद जी, ये दोनों ऐसे साथी हैं, सदन में शायद उनकी तरफ बहुत कम लोगों का ध्यान गया होगा, लेकिन कोई भी सत्र ऐसा नहीं होगा कि जब उनके साथ मुझे अपने चैम्बर में बैठ कर अलग-अलग विषयों पर सुनने का, समझने का मौका न मिला हो। Even कश्मीर की भी बारीकियाँ, जब मैं उनके साथ बैठता था, कभी-कभी तो वे परिवार के

साथ भी आते थे, वे इतने अनेक पहलू मेरे सामने रखते थे, वह मेरे लिए भी बड़ा enlightening रहता था। मैं हमारे इन दोनों साथियों का, जो मेरे साथ व्यक्तिगत रूप से नाता रहा और जो जानकारियाँ मुझे इनसे मिलती थीं, उनके लिए इनका हृदय से आभार भी व्यक्त करता हूँ। मुझे विश्वास है कि उनकी commitment और उनकी क्षमता, ये दोनों देश के लिए और विशेषकर जम्मू-कश्मीर के काम आएँगी; देश की एकता, देश की सुख-शांति, वैभव को बढ़ाने में काम आएँगी। ऐसा मुझे पूरा विश्वास है। इनमें हमारे एक साथी शमशेर सिंह जी भी हैं। अब तो मुझे याद भी नहीं है कि मैं कितने सालों से उनके साथ काम करता रहा हूं। चूंकि मैं संगठन की दुनिया का इन्सान रहा हूं और उसी क्षेत्र में काम करता रहा हूं, इसलिए मुझे कई वर्षों तक जम्मू-कश्मीर में भी काम करने का मौका मिला। उस समय कभी एक साथी कार्यकर्ता के रूप में मुझे इनके साथ एक ही स्कूटर पर ट्रैवल करने का मौका मिलता था। इमरजेंसी के समय में, बहुत छोटी आयु में शमशेर सिंह जी जेल भी गए। इस सदन में शमशेर सिंह जी की उपस्थिति 96% रही है, यानी जो दायित्व जनता ने इनको दिया है, उसको इन्होंने बिल्कुल शत-प्रतिशत निभाने का प्रयास किया है। ये मृदुभाषी हैं, सरल हैं। मुझे विश्वास है कि जम्मू-कश्मीर से रिटायर होने वाले चारों आदरणीय सदस्यों के लिए उनके जीवन का यह कार्यकाल सबसे उत्तम कार्यकाल रहा होगा, क्योंकि इतिहास ने जो एक नई करवट बदली है, उसके वे साक्षी बने हैं, सहयात्री बने हैं। हम सभी के जीवन की यह एक बहुत बड़ी घटना है।

श्रीमान् गुलाम नबी जी के बारे में मैं कहना चाहूंगा, मुझे चिन्ता इस बात की है कि गुलाम नबी जी के बाद जो इस पद को संभालेंगे, उनको गुलाम नबी जी से मैच करने में बहुत दिक्कत पड़ेगी। गुलाम नबी जी अपने दल की जितनी चिन्ता करते थे, देश और सदन की भी उतनी ही चिन्ता करते थे। यह छोटी बात नहीं है, यह बहुत बड़ी बात है, वरना अपोज़िशन के लीडर के रूप में अपना दबदबा पैदा करने का मोह किसी को भी हो सकता है। मैं माननीय शरद पवार जी को भी इसी कैटेगरी में रखता हूं, क्योंकि ये भी सदन की और देश की चिन्ता को प्राइयॉरिटी देने वाले नेता हैं। गुलाम नबी जी ने बखूबी इस काम को निभाया है। मुझे याद है, इस कोरोना काल में मैं फ्लोर लीडर्स की एक मीटिंग कर रहा था, उसी दिन गुलाम नबी जी का फोन मेरे पास आया। उन्होंने कहा, मोदी जी, यह तो ठीक है कि आप यह मीटिंग कर रहे हैं, लेकिन आप एक काम और कीजिए। एक बार आप सभी पार्टी लीडर्स की मीटिंग भी जरूर बुलाइए। मुझे यह सुन कर बहुत अच्छा लगा कि उन्होंने सभी पार्टियों के अध्यक्षों के साथ बैठने का मुझे सुझाव दिया। गुलाम नबी जी के सुझाव पर ही मैंने उस मीटिंग को किया था। मुझे यह कहने में खुशी है कि उनका इस प्रकार का सम्पर्क जो हमसे रहा है, इसका मूल कारण यह है कि उनको सत्ता दल और विपक्ष, दोनों तरफ का अनुभव रहा है। 28 साल का कार्यकाल अपने आप में बहुत बड़ी बात होती है।

बहुत साल पहले की बात है, उस समय शायद अटल जी की सरकार रही होगी, मुझे ठीक से याद नहीं आ रहा है, लेकिन उस समय मैं यहां सदन में किसी काम से आया था। तब तक मैं electoral politics में नहीं था, मैं संगठन का काम करता था। उस समय यहां लॉबी में मैं और गुलाम नबी जी ऐसे ही बैठ कर गप्पें मार रहे थे, तो जैसा पत्रकारों का स्वभाव रहता है, वे बराबर नज़र लगाए हुए थे कि इन दोनों का मेल कैसे हो सकता है? हम दोनों हंसी-खुशी से बातें कर रहे थे और जैसे ही हम वहां से निकले, उन पत्रकारों ने हमें घेर लिया। उस समय गुलाम नबी जी ने

उन पत्रकारों को बहुत बढ़िया जवाब दिया और वह जवाब हम सब लोगों के बहुत काम आने वाला है। उन्होंने कहा, भाई, देखिए, आप लोग हमें अखबारों में, टीवी माध्यमों में या पब्लिक मीटिंग्स में लड़ते-झगड़ते देखते हैं, लेकिन जैसा पारिवारिक वातावरण इस छत के नीचे होता है, वैसा कहीं नहीं होता है। हम लोगों में आपस में आत्मीयता होती है, सुख-दुख में हम एक-दूसरे के साथ होते हैं। यह जो स्पिरिट है, यह स्पिरिट अपने आप में बहुत बड़ी बात है।

गुलाम नबी जी के एक शौक के बारे में शायद बहुत कम लोगों को पता होगा। जब आप उनके साथ बैठेंगे, तब ही उनके इस शौक को जान पाएंगे। हम लोग सरकारी बंगले में रहते हैं, तो बंगले की दीवारों और अपने सोफा सेट के आसपास ही हमारा दिमाग रहता है। लेकिन गुलाम नबी जी ने उस बंगले में जो बगीचा बनाया है, यानी एक प्रकार से कश्मीर की घाटी की याद दिला दे, ऐसा बगीचा बनाया है और इस काम का गर्व भी है, वे इसे समय भी देते हैं, नई-नई चीज़ें जोड़ते हैं और हर बार जब कम्पिटीशन होता है तो उनका बंगला नम्बर वन पर आता है। अपनी सरकारी जगह को भी कितने प्यार से संवारना, यानी उन्होंने बिल्कुल मन से इसे संभाला है। जब आप मुख्य मंत्री थे, मैं भी एक राज्य के मुख्य मंत्री के नाते काम करता था। हमारी बहुत गहरी निकटता रही है, उस काल तक। शायद ही कोई ऐसी घटना मिल सकती है जबकि हम दोनों के बीच में कोई सम्पर्क सेतु न रहा हो।

एक बार गुजरात के यात्रियों, क्योंकि जम्मू-कश्मीर में जाने वाले टूरिस्ट्स में गुजरात का बहुत बड़ा नम्बर रहता है, वहां टेररिस्ट्स ने उन पर हमला कर दिया, शायद करीब आठ लोग मारे गये। सबसे पहले गुलाम नबी जी का मुझे फोन आया और वह फोन सिर्फ सूचना देने का नहीं था। फोन पर उनके आंसू रुक नहीं रहे थे। उस समय श्री प्रणब मुखर्जी साहब डिफेन्स मिनिस्टर थे, मैंने उन्हें फोन किया कि अगर फोर्स का हवाई जहाज डेड बॉडीज़ को लाने के लिए मिल जाए, क्योंकि काफी रात हो गई थी, तो प्रणब मुखर्जी साहब ने कहा आप चिंता मत कीजिए, मैं व्यवस्था करता हूं। लेकिन रात में फिर गुलाम नबी जी का फोन आया, वे एयरपोर्ट पर थे। एयरपोर्ट से उन्होंने मुझे फोन किया और जैसे अपने परिवार के सदस्य की चिंता करते हैं, वैसी चिंता उन्हें थी। पद, सत्ता जीवन में आते रहते हैं, लेकिन उन्हें कैसे पचाना है, यह इनसे सीखना चाहिए। मेरे लिए वह बड़ा भावुक पल था। दूसरे दिन सुबह फोन आया कि मोदी जी, सब लोग पहुँच गये? इसलिए एक मित्र के रूप में गुलाम नबी आज़ाद जी का घटनाओं और अनुभवों के आधार पर मैं आदर करता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि उनकी सौम्यता, उनकी नम्रता, इस देश के लिए कुछ कर गुजरने की उनकी कामना, ये उनको कभी चैन से बैठने नहीं देगी। मुझे विश्वास है कि जो भी दायित्व जहाँ भी वे सम्भालेंगे, वे जरूर value addition करेंगे, contribution करेंगे और देश उनसे लाभान्वित होगा, यह मेरा पक्का विश्वास है।

मैं फिर एक बार उनकी सेवाओं के लिए आदरपूर्वक धन्यवाद करता हूँ। व्यक्तिगत रूप से भी मेरा उनसे आग्रह रहेगा कि मन से मत मानिए कि अब आप इस सदन में नहीं हैं, आपके लिए मेरे द्वार हमेशा खुले हैं, चारों माननीय सदस्यों के लिए खुले हैं। आपके विचार, आपके सुझाव - क्योंकि देश में यह सब बहुत जरूरी होता है, यह अनुभव बहुत काम आता है, जो मुझे मिलता रहेगा, यह अपेक्षा मैं रखता ही रहूँगा। आपको मैं निवृत्त नहीं होने दूँगा। आपको एक बार फिर से बहुत शुभकामनाएँ, धन्यवाद।

श्री सभापतिः धन्यवाद प्रधान मंत्री जी। श्री शरद पवार जी।

श्री शरद पवार (महाराष्ट्र): सभापति महोदय, आज के दिन कई सालों से हमारे साथ सहयोग देने वाले साथी मीर मोहम्मद फ़ैयाज़, श्री शमशेर सिंह मन्हास, श्री नज़ीर अहमद लवाय और श्री गुलाम नबी आज़ाद, इन सदस्यों का सदन का कार्यकाल समाप्त हो रहा है। हमारे ये साथी जम्मू-कश्मीर से आते हैं। आज देश के जिस राज्य के बारे में हम सब चिन्तित हैं, वहाँ से यहाँ आने के बाद हमेशा उस क्षेत्र का और साथ ही साथ भारत वर्ष का रिश्ता हमेशा अच्छा रहे, इस पर ध्यान देने वाले ये चारों सदस्य थे।

गुलाम नबी आज़ाद जी के साथ काम करने का मौका मुझे कई सालों से मिला। आज़ाद साहब basically संगठन के आदमी थे। राजनीति में शुरुआत उन्होंने कांग्रेस की विचारधारा से जम्मू-कश्मीर में युवक संगठन बना करके की। इनका काम देखने के बाद कांग्रेस पार्टी ने, उस समय के कांग्रेस पार्टी के जो नेतृत्व थे, उन सभी लोगों ने - इनके संगठन-कौशल्य का लाभ देश भर में मिले - इस आवश्यकता को मद्देनज़र रखते हुए उनके ऊपर इंडियन यूथ कांग्रेस के प्रेज़िडेंट की जिम्मेदारी दे दी थी। हम लोग इनसे थोड़े सीनियर थे और हम लोगों ने देखा कि पूरे देश के सभी राज्यों को साथ लेकर एक नई पीढ़ी को संगठित करने का काम इन्होंने अच्छी तरह से किया था।

उनके जीवन में 1982 एक ऐसा साल था, मुझे लगता है कि वह इन्हें हमेशा याद रहेगा। एक तो 1982 में इन्होंने शादी की और दूसरा, महाराष्ट्र का एक सबसे पिछड़ा डिस्ट्रिक्ट था, जिसका नाम वाशिम है, वह 1982 में काँगेस पार्टी की तरफ से वाशिम से चुनाव लड़ने के लिए खड़े हुए। चूँकि मैं अपोज़िशन में काम करता था, इसलिए मैंने वहाँ जाकर बताया कि कश्मीर से आए हुए हमारे साथी यहाँ से चुनाव लड़ना चाहते हैं, हम उनको यह मौका नहीं देंगे। हम लोगों ने इनके खिलाफ कई पब्लिक मीटिंग्स लीं, मगर गुलाम नबी आज़ाद जी ने वहाँ से चुनाव लड़ा और वे वहाँ से चुन कर आ गए। यह वाशिम, जैसा कि मैंने कहा कि एक पिछड़ा हुआ डिस्ट्रिक्ट था, मगर इन्होंने वहाँ जाकर एक इलेक्शन, दो इलेक्शन, तीन इलेक्शन जीत कर वहाँ की जनता का विश्वास हासिल किया और हमेशा विकास के क्षेत्र में वाशिम का चेहरा कैसे बदल सकता है, इस पर इन्होंने ध्यान दिया। चाहे वहाँ के इरिगेशन प्रोजेक्ट्स हों, वहाँ की खेती में सुधार कैसे हो, वहाँ पर शिक्षा के क्षेत्र में जो कोई institutions काम करते थे, उनकी समस्या हल कैसे हो - इन्होंने इन सभी क्षेत्रों में हमेशा ध्यान दिया। इसलिए वाशिम के नागरिक आज भी इनको हमेशा याद करते हैं। जम्मू-कश्मीर से आए हुए साथी विदर्भ के वाशिम जैसे डिस्ट्रिक्ट में वहाँ के विकास के बारे में दिलचस्पी लेते हैं, वाशिम के लोग यह कभी नहीं भूले और वे आज भी इनको हमेशा याद करते हैं।

इन्होंने वाशिम के साथ-साथ पूरे विदर्भ के विकास के लिए ध्यान देने का काम किया। कई बार राज्य सरकार में जो कोई हमारे जिम्मेदार लोग थे, जिनके हाथ में राज की नौका थी, इन लोगों के साथ भी, जब आवश्यकता पड़ी, इन्होंने संघर्ष करने का काम किया, क्योंकि विदर्भ किसी क्षेत्र में पीछे नहीं रहना चाहिए और आज की एकता के लिए इसकी बहुत आवश्यकता है - यह बात इन्होंने हमेशा सामने रखी।

जैसा कि माननीय प्रधान मंत्री जी ने अभी कहा कि इन्होंने कई साल यहाँ बिताए। मुझे लगता है कि संसद में शायद गुलाम नबी आज़ाद जी ऐसे एक मात्र सदस्य होंगे, जिन्हें इस देश की

गवर्नमेंट के जितने डिपार्टमेंट्स, कमेटीज़ हैं, उन सभी में काम करने का मौका मिला। वे डिफेंस मिनिस्ट्री में थे, Information & Broadcasting Ministry में थे, Food and Civil supplies Ministry में थे, होम मिनिस्ट्री में थे, पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्ट्री में थे, Civil Aviation में थे, Tourism में थे, Water Resources में थे, Urban Development में थे, Law & Justice में थे।

11.00 A.M.

मुझे नहीं लगता कि इस सदन में किसी एक व्यक्ति ने इतनी मिनिस्ट्रीज़ में एक साथ काम किया होगा, इन्होंने इतनी मिनिस्ट्रीज़ में काम किया है। इसके साथ-साथ, इन्होंने केंद्रीय मंत्री के रूप में भी काम किया और हम कुछ सालों से देख रहे हैं कि इन्होंने प्रतिपक्ष के नेता के रूप में संसद सदस्य और इस पद की गरिमा को ऊँचा करने का काम किया है। राजनीति में संघर्ष होते हैं, मगर जैसे प्रधान मंत्री जी ने कहा कि व्यक्तिगत सरोकार किस तरह से रखना चाहिए, इन्होंने हमेशा इसका एक आदर्श दिया। जब ये Parliamentary Affairs Minister थे, तब इनके रिश्ते पूरे Opposition के साथ बड़े अच्छे रहते थे। सभी Opposition parties के जितने नेता थे, ये उन सभी के साथ हमेशा एक संपर्क रखते थे और अगर उनकी कोई समस्या है, तो उसे जानकर हल करने के लिए इनका सहयोग हमेशा Opposition के सब नेताओं को मिला। Parliamentary Affairs Minister के नाते ये सदन के सभी सदस्यों का विश्वास कमाने वाले थे। मैं पिछले 50 साल से संसदीय राजनीति में हूँ, चाहे राज्य में हो, चाहे यहाँ हो, मगर शायद इतने उत्साह के साथ संसद सदस्य की जिम्मेदारी संभालने वाला मंत्री मैंने आज तक नहीं देखा। महोदय, अगले हफ्ते से इनका कार्यकाल समाप्त हो रहा है, मगर मुझे इस सदन पर पूरा विश्वास है, यह हमारी चाह भी है कि आज नहीं, तो कल, उचित समय पर, शायद उस समय, जब वहाँ चुनाव आएंगे, इन्हें फिर यहाँ वापस आने का एक मौका मिलेगा और इनके अनुभव का, इनका देश के लिए जो लगाव है, इस लगाव का लाभ इस सदन के माध्यम से पूरे देशवासियों को हमेशा मिलेगा, यही हम चाहते हैं। मैं यहाँ इससे ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूँ। गुलाम नबी आज़ाद जी, आपने इस सदन के माध्यम से, जम्मू-कश्मीर के मुख्य मंत्री के माध्यम से, पार्टी के संगठन की जिम्मेदारी कंधे पर लेकर हमेशा समाज और देश की सेवा की, यह हम कभी नहीं भूलेंगे। इतना ही कहकर मैं आपसे इजाज़त लेता हूँ, नमस्कार।

श्री सुखेन्दु शेखर राय (पश्चिमी बंगाल) : सर, आज जम्मू-कश्मीर से हमारे कुछ साथी इस सदन से रिटायर हो रहे हैं। आदरणीय प्रधान मंत्री जी और शरद पवार जी ने भी इन लोगों के बारे में कहा, मैं अपनी पार्टी की ओर से सिर्फ यही बोलना चाहता हूँ, मैं खासकर गुलाम नबी आज़ाद जी के बारे में बोलना चाहता हूँ कि आज तो मेरे मन में यादों की बरसात हो रही है, क्योंकि मैं इन्हें 1978-79 से पहचानता हूँ, जब ये इंडियन यूथ काँग्रेस के प्रेज़िडेंट थे और मैं स्टेट यूथ काँग्रेस का जनरल सेक्रेटरी था। मैं इन्हें बहुत सालों से जानता हूँ। संगठन में भी और सरकार में भी इनके योगदान, इनकी कार्यपद्धति की सबने प्रशंसा की और इन्होंने सबकी दृष्टि को आकृष्ट किया। अभी शरद पवार जी बता रहे थे कि इन्होंने कितने सारे डिपार्टमेंट्स या मिनिस्ट्रीज़ का काम संभाला था। मैं उस लिस्ट में नहीं जाऊँगा, लेकिन उस जमाने में 3-tier Cabinet हुआ करती थी -

Cabinet Minister, the Minister of State and the Deputy Minister. इसकी शुरुआत शायद Deputy Minister of Law and Justice से हुई थी। उस ज़माने में मैंने थोड़े दिन पहले ही वकालत शुरू की थी। हम इनके साथ बहुत सारी बातों पर चर्चा करते थे और हमारे संगठन का कोई भी कार्यक्रम जब स्टेट में होता था, तब ये हमेशा हमारे साथ आते थे। सर, मुझे बहुत सारी यादें आ रही हैं, लेकिन मैंने पहले ही कहा है कि समय की पाबंदी है।

सर, मुझे मुकेश जी के एक पुराने गाने की याद आ रही है। उस गाने को एस.डी. बर्मन जी ने स्वरबद्ध किया था, शैलेन्द्र जी ने लिखा था और फिल्म 'बंदिनी' थी। उसमें मुकेश जी गा रहे थे- "ओ जाने वाले, हो सके तो लौट के आना।" आज हमारे यहाँ से जो लोग इस सदन को छोड़कर जा रहे हैं, यह मजबूरी है, ऐसा नियम है, लेकिन हमारी प्रार्थना होगी कि उनकी पार्टी सोच-विचार करे और उनको यहाँ दोबारा आने का मौका दे, क्योंकि मैंने खासकर, गुलाम नबी जी जैसा Leader of the Opposition शायद ही देखा है, तो इसलिए मेरी यही प्रार्थना रहेगी। आज हमारे जो साथी रिटायर कर रहे हैं, उनमें से कोई अगर कहीं दूसरे काम में भी रहें, तो उनके कुशल-मंगल के लिए मैं प्रार्थना करता हूँ। उनके परिवार के साथ उनका योगदान बुढ़ापे में ठीक रहे, ऐसा महसूस करते हुए और सबके कुशल-मंगल के लिए प्रार्थना करते हुए मैं अपने दल 'ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस' की ओर से और हमारी नेत्री ममता बनर्जी की ओर से सभी को शुभकामनाएँ ज्ञापित करता हूँ, धन्यवाद।

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN (Tamil Nadu): Hon. Chairman, hon. Prime Minister, hon. Leader of the Opposition, Ghulam Nabi Azad ji, eminent leaders and my colleagues, after hearing the speech of our hon. Prime Minister, I have no confidence to speak anything about Shri Azad. The way in which our hon. Prime Minister has spoken about the good qualities of Mr. Azad is really exemplary. Sir, it is a good gesture that our hon. Prime Minister, in spite of his busy schedule, spared time and spoke about the qualities of Shri Azad.

Sir, when I entered into politics, in fact, I was pushed into politics by hon. *Amma*, I expressed my reluctance. At that time, *Amma* directed me to attend and hear the speeches of all the leaders. When she directed me to interact with all the political leaders, she specifically mentioned the name of Shri Ghulam Nabi Azad. She advised me not to hesitate but to move with him and try to learn how to build our nation. She told me, "Do not confine to your legal profession; it is self-centred." At that point of time, I was not able to digest it but later on when I came here, I understood that any profession is self-centred but it is not so in case of politics.

Sir, all the issues, be it pandemic or be it relations with China, every issue has been handled by our Prime Minister effectively and justice has been rendered. That is called justice. Rendering justice after adjudication is not justice. So, Sir, justice is being rendered by our hon. Prime Minister and our valuable Members.

In one of the crisis, the water crisis, Shri Sharad Pawar educated me how to deal with this subject. In all matters, I used to get calls from Azad ji but at times, I was a little bit nervous. When *Amma* was alive, I never took any decision without consulting her. Even now, I have to go by the decision of my Party high command. I cannot immediately respond and give reply. So, when Azad ji used to contact me, at times, I expressed my difficulty. He always appreciated my response and said, "You must obey the words and command of the Party and act according to the direction given by your political party. It is a good habit. You do not take any independent decision."

Even now, though I am the Leader here, I do not take any independent decisions. I go by the direction of the high command. In the end, I thank the hon. Chairman for giving me the opportunity to express my views.

SHRI PRASANNA ACHARYA (Odisha): Sir, on my behalf and also on behalf of my party, I bid farewell and express my compliments to all the four retiring Members. Particularly about Ghulam Nabi *ji*, the hon. Prime Minister has very well described all aspects of his personality. He is a politician who started his politics as Secretary of Block Congress Committee in Jammu and Kashmir and within no time he rose to the top position in the Party and became the Youth President of the Congress Party. Sir, I remember one incident. I never knew Ghulam Nabi *ji* personally. During the time when he was the Health Minister, I happened to be the Health Minister of Odisha under Navin Patnaik *ji*. He visited Odisha and that was the first time when I met him. A lot of Congress workers were gathered there. When we met each other, he embraced me and I was surprised. He behaved as if he knew me since decades. This surprised everybody present there. From that day I came to know of a man, a politician, his ability to befriend everybody. Sir, Kashmir may be a part of his politics as he is a politician from Kashmir, but I think, Kashmir is not only a part of his politics, Kashmir is his heart, Kashmir is his mind. Therefore, whenever he speaks about Kashmir, I have seen his emotions about that place. I hope, as everybody has expressed, he will continue in active politics and will continue to contribute whatever is possible not only for Kashmir but also for the entire nation. With these words, Sir, I once again compliment all the four Members.

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): Mr. Chairman, Sir, one of the painful moments in life is to speak on a farewell address, and today we are bidding farewell to four of our colleagues from Jammu and Kashmir, and the hon. Leader of Opposition is one

among them. There can be no other words than the emotional speeches and the expressions which our Prime Minister made on him about his qualities.

Sir, I know him for the past two decades as a Union Minister and now as the Leader of the Opposition. During the Covid-19 Pandemic, when everyone was under lockdown and the whole world was segregated from the outside world, when we were not able to meet even our own blood relatives, we used to receive calls from two persons now and then enquiring about our welfare. One is you, Sir, the hon. Chairman, and the other is our LoP. We were far away and everyone was entangled. But he showed his concern and was in regular contact. Apart from that, as you rightly said, Sir, whenever we go near the lift, Room no. 27B is empty; we still miss Shri Arun Jaitley. So also, hereafter, I am sorry to say, when I turn to my right side, I will miss Ghulam Nabi *ji*. In that place, we can see only him. As the Leader of Opposition, he was a great unifying force. On many situations, he used to coordinate with all of us, used to call us to his room. We could call him any time of the day and interact with him or clear any doubts. Another good quality of him is, he would listen to what others say and then arrive at a consensus or a decision. That helped us a lot in performing our work in this House. The way he articulated in this House on various deliberations should be remembered. He has been a role model to all the Members of Parliament as to how to speak on the floor of the House on different issues. As hon. Prime Minister rightly said, though he belongs to one party, his utmost concern is of the nation and the society. Of course, I don't think that he is retiring even. He may become the Chief Minister of Jammu and Kashmir or he may come back to this House or he may be elevated to any other position because a bend is not the end of life. This is only a bend. To be precise, Sir, the House will be lacklustre in the coming days after Ghulam Nabi *ji*, and so also our other colleagues, after retiring. I wish him and all the other Members all the best in their future endeavours. Thank you very much, Sir.

SHRI K.R. SURESH REDDY (Telangana): Sir, I rise to bid farewell to Azad *sahib*. This is how the world knows him. In my political experience, I have noticed that there are very few leaders who can remember hundred people by name in every State of this great country and Azad sahib stands to be one of them. His understanding of our country, his connect with the countrymen is great. Today, I stand to thank him, especially on behalf of my leader KCR *ji*, for the role he played in the formation of Telangana which had been a long-cherished dream of our people. When the Prime Minister stands up to bid farewell to the Leader of the Opposition and gets emotional, that clearly speaks of the bond and bonding Azad *sahib* has with this House, his love

for the legislature and his articulation. I would like to bring to the notice of this great House my own experience as the Speaker of the Andhra Pradesh Assembly. A.P.J. Abdul Kalam *ji* wanted to address the legislature. I, as the Speaker, initiated a lecture by the President *sahib* in the Andhra Pradesh Assembly. After the event got over, Azad *sahib,* who was then the Chief Minister of Jammu and Kashmir, immediately called me and congratulated me on that wonderful initiative. It is not a normal practice for the President to address State Assemblies. But that initiative was wonderful. He wanted to know every detail, how the event took place and how I was successful in eventually calling Kalam *ji* to address the House there. Well, all I can say is that the country should surely utilize his diplomacy and his understanding. I am sure a lot of diplomatic issues which reach a stalemate will be there in the coming years and his leadership would probably end such stalemates. I wish him and his family all the best. I hope and pray that he continues to be in the service of our nation. Thank you, Sir.

SHRI V. VIJAYASAI REDDY (Andhra Pradesh): Sir, on behalf of YSR Congress Party, I would like to extend farewell greetings to the outgoing Leader of the Opposition, Shri Ghulam Nabi Azad *ji*, and three more hon. Members of this august House. I have had a limited interaction with the hon. Leader of the Opposition. Let me be frank enough to say that I don't have positive opinion about the Congress Party because of my past experiences with the party. In fact, after hearing the hon. Prime Minister about his experience with the hon. Leader of the Opposition, Shri Ghulam Nabi Azad, I have changed my opinion, not about the party but about Ghulam Nabi Azad *ji*. He will also be remembered as the leader who had realization of reality. Realization of reality is a great thing and is contrary to the Indian National Congress. Sir, I am not criticizing it at this juncture. But I am trying to appreciate his contribution as I have heard from other hon. Members, including the hon. Prime Minister of the country. With this on behalf of my party, YSR Congress Party, I wish him luck for his future endeavours. He may continue with his social work and political work and contribute his best to the country. Thank you very much, Sir.

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश): श्रीमन्, जब-जब इस तरह के अवसर आते हैं कि हमारे कुछ माननीय सदस्य रिटायर होते हैं और मैं बहुत लंबे अरसे से देख रहा हूं कि उस दिन पूरी बात कहना मेरे लिए मुश्किल हो जाता है। आज प्रधान मंत्री जी ने इतना बोझिल और भावुक होकर भाषण दिया, जिससे इस सदन का वातावरण इतना भावुक हो गया है कि पूरी बात कहना मेरे लिए संभव नहीं है। खास तौर से आज कश्मीर के लोग रिटायर हो रहे हैं। वह राज्य जितना खूबसूरत है, उतने ही मन से और सोच से खूबसूरत वहां से आने वाले प्रतिनिधि थे।

गुलाम नबी साहब का बहुत लंबा अनुभव है। मुझे इस सदन में आए हुए बहुत लंबा समय हो गया है और मैं लगातार आज़ाद साहब को देख रहा हूं। मुझे एक चिंता जरूर है कि इनकी अनुपस्थिति में हम देखते आए हैं कि जब डेडलॉक होता था, तब हमेशा एक ब्रिज का काम आज़ाद साहब करते थे। यह एक चिंता का विषय है कि सदन में जब डेडलॉक होगा, तो इनका alternative कौन होगा? माननीय प्रधान मंत्री जी ने भी इसकी तरफ संकेत किया था। ये इतने सौम्य हैं और जब सदन में volatile स्थिति हो, तब भी अपने को बिल्कुल शांत रखते हुए सारे नेताओं को मिलाकर लोगों को रास्ते पर लाने का काम हमेशा इन्होंने किया। इनके जाने से जो शून्य होगा - हमें लगता है कि जैसे अरुण जी के जाने के बाद हुआ, वैसे ही इनके यहां से जाने के बाद होगा। मैं यह कामना करता हूं कि ये पुनः इस सदन में आएं, क्योंकि माननीय प्रधान मंत्री जी, इनके जाने से यह सदन कुछ गरीब हो जाएगा, ऐसा मेरा अनुभव है। मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं। आपके जो गुण हैं, यदि मैं उनकी चर्चा करने लगूंगा, तो इमोशनल हो जाऊंगा और अपनी पूरी बात कह नहीं पाऊंगा। मैं आपके और अन्य सभी साथी, जो आज रिटायर हो रहे हैं, उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए हमेशा यह प्रार्थना करूंगा कि उनको फिर मौका मिले, नहीं तो जिस सम्मान के साथ, आदर के साथ वे समाज सेवा करते रहे हैं, वैसे ही करते रहें। कश्मीर, जो यूनियन टेरिटरी है, अगर माननीय प्रधान मंत्री जी की कृपा से वह फिर राज्य बन जाए, तो वे वहां चीफ मिनिस्टर बनकर आएं, यही मेरी कामना है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह (बिहार): धन्यवाद, सभापति महोदय। मैं अपनी ओर से, अपनी पार्टी की ओर से और हमारी पार्टी के नेता माननीय नीतीश बाबू की ओर से आज जो हमारे कश्मीर के चार साथी यहां से रिटायर हो रहे हैं, उनको शुभकामनाएं देता हूं। सर, हमारे नेता प्रतिपक्ष हैं, उनका नाम बहुत शानदार है। गुलाम से शुरू होते हैं और आज़ाद पर खत्म होते हैं और बीच में नबी है। आप नबी का इतिहास जानते हैं, खासकर इस्लाम में कितना अलौकिक रहा है। आपका नाम इतना सुंदर रहा है और उसके बाद आपने जो काम किए हैं, जिनकी चर्चा आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने की, आदरणीय शरद पवार जी ने की, वे बहुत शानदार हैं। एक मुख्य मंत्री के रूप में, एक केन्द्रीय मंत्री के रूप में, सांसद के रूप में और नेता प्रतिपक्ष के रूप में आपने अपने दायित्व का निर्वहन किया है, उसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी बगीचे के बारे में आपकी चर्चा कर रहे थे। आपको याद नहीं होगा, लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूं कि माननीय नीतीश बाबू 22, अकबर रोड पर रहते थे। वहां आपने जो आम के खूबसूरत बगीचे लगाए थे, उनको दिखाने के लिए बुलाया था। मैं उनके साथ था, उस समय में मैं उनका पी.एस. था। उन्होंने कहा कि मेरे यहां बहुत सुंदर लॉन है, लेकिन इसमें घास उग जाती है। बिहार में हम लोग उसको मोथा कहते हैं। वह निकलती नहीं है, जिससे लॉन की खूबसूरती समाप्त हो जाती है। आपने उसका बहुत सुंदर उपाय बताया। आपने बोला कि घास निकालने की जो खुरपी होती है, वह नुकीली होनी चाहिए और आप माली को बुलाकर समझाएंगे कि यदि वे ऐसा करेंगे, तो लॉन सुंदर हो जाएगा। मैंने आपको यह इसलिए याद दिलाया कि प्रधान मंत्री जी कह रहे थे कि आपको बगीचे का शौक है, यह बहुत ही अच्छा है। आप जिस प्रकार से बगीचा संवारते हैं, उसी प्रकार से समाज को सवांरते रहेंगे। हम आपको farewell नहीं कहेंगे, हम आपको और सभी साथियों को

fare-thee-well कहेंगे। जहां आप जाएं, बिल्कुल अच्छे रहें, स्वस्थ रहें और समाज की सेवा करते रहें, बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI ELAMARAM KAREEM (Kerala): Sir, it is a painful reality that Ghulam Nabi Azad*ji* and three others from Jammu and Kashmir are retiring. They have to retire. I join with all the emotions expressed by hon. Prime Minister and other leaders. My experience with them is of worth in my life. I wish them all the best and expect to see them again in this House or the other. A politician has no retirement. This is also a part of their life. Outside, politicians are with people every time. So, I hope, I can meet them all in my political life in different stages and at different places in this country.

While referring to Ghulam Nabi Azad*ji*, particularly, as the hon. Leader of Opposition, he tried to unite not only Opposition parties but interacted with Ruling Party also for the smooth running of this House. I have felt it and I have seen it several times. As the Leader of the Opposition, he led us all and gave us direction. He gave us a perfect view for the smooth conduct of this House. He always used to be a role model for all the Members and the people of this country. While he stands from his seat for speaking, I see his feet at Kanyakumari and his head over Kashmir Valley. Such a national leader, he is always a leader of the nation and not just a leader of the Congress Party. He is very soft while speaking. He is very soft in his behavior and very handsome in appearance. I saw a roaring lion in Azad*ji* on 5th of August, 2019, in this House. It would be kept in mind all my life. I respect and I wish all the best to Azad*ji* and all other Members. Thank you, Sir.

प्रो. मनोज कुमार झा (बिहार): शुक्रिया सभापति महोदय। फ़ैयाज़ भाई, नज़ीर जी, शमशेर सिंह मन्हास जी और गुलाम नबी आज़ाद जी, मैं अपने दल, राष्ट्रीय जनता दल और अपनी ओर से तमाम रिटायरिंग साथियों को शुभकामनाएं देता हूं। मैं महज़ दो बातें कहूंगा। माननीय सभापति महोदय, जब आप बोल रहे थे और जब माननीय प्रधान मंत्री जी बोल रहे थे, हाउस में पूरा सन्नाटा था और वह सन्नाटा इस बात की तसदीक कर रहा था कि गुलाम नबी जी, जो अब पूरी तरह आज़ाद भी हैं, उन्होंने पद से अपना कद नहीं बनाया है, उनका कद पद से इतर है। मैं समझता हूं कि संसदीय लोकतंत्र में जो सबसे महत्वपूर्ण चीज़ होती है और मैं आज जो माहौल देख रहा हूं, सत्ता पक्ष और विपक्ष बदल जाता है, लोगों की भूमिकाएं बदल जाएंगी, लेकिन लोगों के अंदर का जो मिज़ाज है, जो मर्म है, वही संसदीय लोकतंत्र में स्मरण किया जाता है। माननीय आज़ाद साहब, मैं एक व्यक्तिगत वाकया बताना चाहता हूं। सर, मैं चुनकर आया था, मेरा कोई संसदीय अनुभव नहीं था। मैं विश्वविद्यालय से सीधे यहां आया था। पहले दिन मुझे पता नहीं था, कांग्रेस के एक सदस्य ने कहा कि वहां से होते हुए यहां एलओपी को भी ग्रीट करना है। मैं हड़बड़ा सा गया था, लेकिन जैसे ही मैंने पहली बार सदन में बोला, पहला compliment आज़ाद साहब की ओर से

आया था। उन्होंने कुछ व्यक्तिगत सलाह भी दी थी, जिस पर मैंने अमल किया। मैं आज के इस दिन के माध्यम से अपने दल की ओर से कहना चाहता हूं कि आज़ाद साहब, आप यहां आएं, कहीं जाएं, लेकिन जो आपने हासिल कर लिया, वह आपसे कोई ले नहीं पाएगा। शुक्रिया सर, जय हिंद।

श्री सभापतिः धन्यवाद। श्री सतीश चन्द्र मिश्रा जी।

श्री सतीश चन्द्र मिश्रा (उत्तर प्रदेश)ः सभापति महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आज मैं अपनी बहुजन समाज पार्टी तथा अपनी पार्टी की मुखिया बहन मायावती जी और व्यक्तिगत रूप से अपनी तरफ से भी अपने चारों जम्मू-कश्मीर के साथियों, श्री गुलाम नबी आज़ाद जी, मीर मोहम्मद फ़ैयाज जी, श्री नज़ीर अहमद लवाय जी और श्री शमशेर सिंह मन्हास जी को, जो इस सदन से आज विदा होंगे, उनको बधाई देता हूं, लेकिन अभी उनकी पूरी लाइफ आगे कार्य करने के लिए बची हुई है, जिसमें वे जरूर आगे कार्य करेंगे और जो उन्होंने अभी तक रास्ता दिखाया है, उसको दिखाने का काम करेंगे। मैं उनको बधाई देता हूं कि उन्होंने जिस तरीके से सदन में कार्यवाही के दौरान, चाहे वे सत्ता पक्ष में रहे, चाहे वे विपक्ष में रहे - मुझे लगभग 17 वर्ष इस सदन में हो रहे हैं, उनको मैंने दोनों तरफ से देखा है। मैंने उनको उस समय भी देखा है जब हम लोग यहां पर बहुत agitated थे, हमारे 16-17 सदस्य थे और हाउस नहीं चल पाया था, हाउस adjourn हो गया था क्योंकि एस.सी./एस.टी. का Special Component Plan का जो पैसा था, वह divert हो गया था। उस समय यहां पर 2010 में एशियन गेम्स हो रहे थे और वह पैसा खेल में लगा दिया गया था। उस समय आप मंत्री थे, आप सत्ता पक्ष में थे, आपने बाहर हमें रोका और कहा कि इससे काम नहीं चलेगा। इस तरीके का काम किया जाए जिससे कुछ फायदा हो और जो आपका agitation है, वह खत्म हो और उन लोगों का भला भी हो। उन्होंने कहा कि हम हाउस में इसके संबंध में एक बयान दिलवा देते हैं, जो कि record में आएगा और जो पैसा divert हुआ है, वह पैसा वापस उसमें इस्तेमाल हो सकेगा। उसके बाद उन्होंने ऐसा किया और फिर हाउस चला। मुझे यह वाकया आज भी याद है। उनकी जितनी भी meetings हुई हैं, चाहे वे अपोज़िशन में रहे हैं तब भी यहां पर कोई agitation हुआ या और कोई मसला हुआ, उनका फोन मीटिंग के लिए सबसे पहले आ जाता था। हम लोग बहुत agitated होकर इनके कमरे में जाते थे कि हम लोग ऐसा करना चाहते हैं, ऐसा नहीं करना चाहते हैं, तो वे सभी की बातें सुनने के बाद एक कप चाय पिलाकर और बिस्कुट खिलाकर बहुत आसानी से बहुत सरल भाषा से, हम लोगों को समझाने का काम करते थे और हम लोग अपनी बात वहीं पर खत्म कर देते थे। जो तरीका वे बताते थे, जो इनकी आवाज़ है, जो इनका बात करने का तरीका है, वह हमें हमेशा याद दिलाता रहता है - लखनऊ की जो भाषा है, जो हमारे यहां की नफ़ासत और नज़ाकत वाली भाषा है, वह हमेशा इनकी भाषा में नज़र आती रही है।

आज माननीय प्रधान मंत्री जी ने जो आपके बारे में experience बताया है, जो बातें आपके बारे में कही हैं, उनके बाद कुछ भी जोड़ पाना बहुत ही मुश्किल है। आज सुबह ही हमने अपनी नेता को, बहन मायावती जी को बताया कि आज़ाद जी रिटायर हो रहे हैं, तो उन्होंने कहा कि कोई गलतफहमी है, आप इसे चैक कर लो। आज़ाद जी रिटायर नहीं हो सकते, आपको कोई

गलतफहमी है। मैंने फिर से उनको दोबारा कहा कि आज उनके फेयरवेल की बात हो रही है, तो उन्होंने कहा कि उनका यह फेयरवेल अभी के लिए होगा। फिर भी वे जिस पार्टी में हैं, जहां भी हैं, फेयरवेल करना चाहते हैं, तो पार्टी का ही फेयरवेल हो सकता है, लेकिन उनका फेयरवेल नहीं होगा। इसलिए उनको इस बात को ध्यान में रखना पड़ेगा और गुलाम नबी आज़ाद जी को खोना और छोड़ना इतना आसान नहीं रहेगा। इन बातों के साथ ही, मैं पुनः श्री अरुण जेटली जी को ध्यान में रखते हुए कि श्री अरुण जेटली जी भी इसी सीट पर बैठते थे और उधर भी बैठे थे, जिस सीट पर आप बैठे हैं - वह बात दूसरी है कि हमारा उनके साथ में professional भी और व्यक्तिगत भी दोस्ताना था, परन्तु वे इसको इस हाउस से अलग रखते थे। जब हम अपोज़िशन में, इस साइड में थे और जब वे सत्ता पक्ष में थे, तो उन्होंने हमेशा विरोध जताया, लेकिन बाहर चलकर हमसे हमेशा दूसरे तरीके से बातचीत की और जब यहां पर बैठे तो हमेशा हमें सलाह दी, वही काम गुलाम नबी आज़ाद जी ने हमेशा किया है। मैं फिर से अपनी पार्टी की तरफ से और अपनी तरफ से, व्यक्तिगत रूप से यह उम्मीद करता हूं कि आप बहुत जल्दी दोबारा यहीं पर मिलेंगे और इसी सीट पर मिलेंगे। अब मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं और आपको बधाई देता हूं।

श्री संजय राउत (महाराष्ट्र): धन्यवाद चेयरमैन साहब, हम सभी को कभी न कभी यहां से रिटायर होना है। आज हमारे चार साथी जो जम्मू-कश्मीर से हैं - मीर मोहम्मद फ़ैयाज, श्री शमशेर सिंह मन्हास, श्री नज़ीर अहमद लवाय और हमारे श्री गुलाम नबी आज़ाद साहब - वे रिटायर हो रहे हैं। ये सभी जम्मू-कश्मीर से हैं, जो एक ऐसा राज्य है, जो हमारे दिल में राज करता आया है। जो हमारे साथी हैं - नज़ीर भाई और मीर मोहम्मद जी, मैं इनके बारे में बताना चाहता हूं कि इतने सालों में ये जब भी मिलते थे, तो हमेशा कश्मीर की समस्याओं के बारे में, वहाँ के युवाओं के बारे में बात करते थे और हमें हमेशा निमंत्रण देते थे कि आप कश्मीर में आइए और खुद देखिए कि स्थिति क्या है। हम भी कहते थे कि हम जरूर आएंगे। जब से हमारे गृह मंत्री जी ने धारा - 370 हटा दी है, तब से मैं उनसे कहता था कि अब तो हमें कश्मीर में स्थिति देखने के लिए आना ही पड़ेगा। आज आप लोग रिटायर हो रहे हैं। आज हमारे Leader of Opposition, श्री गुलाम नबी आज़ाद के बारे में कहा गया है। सतीश जी, जैसे आपने कहा, तो मुझे भी विश्वास नहीं हुआ कि आज आज़ाद साहब रिटायर हो रहे हैं। आज़ाद साहब ऐसे व्यक्ति हैं, वे तो कश्मीर के बिन कांटे के गुलाब हैं। उनकी सभ्यता, उनकी नम्रता हमारे लिए हमेशा मार्गदर्शक रही है। आज प्रधान मंत्री जी ने आज़ाद साहब के बारे में जो बातें कहीं, उन्हें कहते-कहते खुद प्रधान मंत्री जी भावुक हो गए। आज उनकी आंखों में आँसू आए, एक ऐसे व्यक्ति के लिए, जो यहाँ बैठा है। उनकी बात सुनकर कुछ समय तक हम भी भावुक हो गए। एक ऐसा व्यक्ति, जिसके साथ हम इतने सालों तक काम करते रहे, जिसका मार्गदर्शन लेते रहे, वह आज इस सदन से हमें छोड़कर जा रहा है। हमें विश्वास है कि उनके बिना यह सदन सूना-सूना लगेगा। ये तो महफ़िल के आदमी हैं, गुलाम नबी आज़ाद जी जल्दी ही इस महफ़िल में, इस चमन में लौटकर आ जाएंगे, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है।

सभापति महोदय, आज़ाद साहब ने इस देश की राजनीति का एक ऐसा दौर देखा है, कि उन्होंने इंदिरा जी से लेकर मोदी जी तक का बहुत बड़ा कालखंड देखा है। मैं यह कहूंगा कि अब आपको जो समय मिलेगा, आप उसमें एक आत्मकथा लिख लीजिए - "इंदिरा जी से मोदी जी तक"। आपने जो देखा है, जो अनुभव लिया है, वह बहुत कम लोगों ने इस देश की राजनीति में

नज़दीक से देखा है। उस वक्त, 1975 में कश्मीर से एक युवा कार्यकर्ता दिल्ली आता है। क्या आपको मालूम है कि उस समय दिल्ली की स्थिति क्या थी? बड़े-बड़े बादशाह, बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ, महाराजा, महारानी यहाँ सिंहासन पर बैठे थे और उस वक्त आप जैसे युवा यहाँ काम कर रहे थे। आप गाँव से आए थे और अपनी मेहनत एवं संघर्ष से आज आप जिस मुक़ाम पर पहुंच गए हैं, यह हमारे लिए भी एक गर्व की बात है, स्वाभिमान की बात है। आज़ाद साहब, मुझे लगता है कि आप कभी रिटायर नहीं होंगे।

सभापति महोदय, महाराष्ट्र से उनका बहुत पुराना रिश्ता है। ये महाराष्ट्र से भी चुनकर पहुंचे हैं। जैसा कि पवार साहब ने कहा कि ये वाशिम, विदर्भ से चुनकर आए थे, जो कि एक बहुत ही पिछड़ा हुआ डिस्ट्रिक्ट है। अगर आप आज भी विदर्भ जाएंगे तो आज़ाद साहब को चाहने वाली उस वक्त की एक जेनरेशन आज भी है। अगर आप कभी आज़ाद साहब से सामने मिले हों, जैसे हमारे जैसे लोग हैं, तो वे थोड़ी-बहुत मराठी भी बोलते हैं, जो उन्होंने उस वक्त सीख ली थी, जैसे "काय", "कसाकाया हे" आदि, वे ऐसे बात करते आए हैं। जैसे मोदी जी भी कभी-कभी मराठी में बात करते हैं, क्योंकि उनका महाराष्ट्र से रिश्ता रहा है, वैसे ही आज़ाद साहब हैं। जब भी हम जैसे लोग उनके सामने आते हैं, तो वे दो शब्द या दो वाक्य मराठी में बोलेंगे ही बोलेंगे। ये जहाँ गए हैं, वहाँ उस स्टेट से, उन लोगों से इनका रिश्ता कायम रहा है। आज़ाद साहब, आपकी कांग्रेस पार्टी में नेता बहुत हैं, आपकी पार्टी में नेताओं की कमी नहीं है, लेकिन पूरा देश जिनको जानता है, पहचानता है, ऐसे गुलाम नबी आज़ाद जैसे बहुत कम लोग हैं। हमने बहुत नज़दीकी से देखा है कि आपने पूरे देश को साथ लेकर काम किए हैं। मैं आज आपको फेयरवेल नहीं दूंगा, बल्कि मैं आपके यहाँ आने तक आपका इंतज़ार करता रहूंगा और मुझे विश्वास है कि आप जरूर आएंगे। मैं एक बार फिर आपको शुभकामनाएं देता हूं।

श्री सभापति : मित्रो, जो लोग यहाँ पर बोलने की इच्छा व्यक्त कर रहे हैं, मैं समय को ध्यान में रखते हुए उनको एक-एक मिनट बोलने की परमिशन दूंगा। कांग्रेस पार्टी की ओर से आनन्द शर्मा जी बोलेंगे। उनके बाद आज़ाद जी रिस्पाँस भी देना चाहते हैं, इसलिए कृपया सभी लोग समय का थोड़ा ध्यान रखिए और समय सीमा का पालन कीजिए। रामदास अठावले जी, आप बोलिए।

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रामदास अठावले) : सभापति महोदयः

"राज्य सभा छोड़ कर जा रहे गुलाम नबी,
हम मिलते रहेंगे आपको कभी-कभी।
आपका नाम है गुलाम
इसलिए मैं करता हूँ आपको सलाम।
आपका नाम है गुलाम, लेकिन आप हमेशा रहे आज़ाद
आप हम सभी को रहेंगे याद।
15 अगस्त को भारत हुआ आज़ाद
लेकिन राज्य सभा से आप आज हो रहे आज़ाद।
आप हमेशा रहो आज़ाद

हम रहेंगे आपके साथ, यह अन्दर की है बात।
मोदी जी जम्मू-कश्मीर का मजबूत करेंगे हाथ
और आपका देते रहेंगे साथ।"

आपका स्वभाव बहुत अच्छा है, आप आदमी बहुत बड़े दिल के हैं। आपको दोबारा इस हाउस में आना चाहिए। अगर कांग्रेस पार्टी आपको यहाँ नहीं लाती है, तो हम लाने के लिए तैयार हैं। यहाँ आने में कोई तकलीफ नहीं है। मैं भी उधर था, मैं इधर आ गया, तो आपको क्या तकलीफ है? इसलिए ठीक बात है, आपको दोबारा हाउस में आना चाहिए, यही हमारी अपेक्षा है, उम्मीद है और इस हाउस को आपकी जरूरत है, इतना ही मैं बताना चाहता हूँ। मैं अपनी RPI की तरफ से आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

SHRI ABDUL WAHAB (Kerala): Thank you, Sir, for giving me an opportunity to bid farewell, -- not farewell, I should say, a temporarily farewell -- to Azad*ji*. I met Azad*ji* in 90s regarding the expansion of Calicut Airport. And, we will remember him for the Cochin Airport and Calicut Airport. Everybody including Pradhan Mantri*ji* talked about Azad*ji* and my party, Indian Union Muslim League, my leader, Sayed Hyderali Shihab Thangal and myself, we all endorse that. I will not take much time of the House. I agree with all that has been said about him. Normally, we all acknowledge a person's services after death but, in front of him, we are all acknowledging his works and his contributions. I am here since 2004 and I think this is the first time for me that such a thing is happening where Pradhan Mantri*ji* and all others are also acknowledging his contribution. I would like to thank Azad*ji* for his wonderful leadership.

श्री सुशील कुमार गुप्ता (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली): सभापति महोदय, आज हम इस हाउस से माननीय गुलाम नबी आज़ाद जी और बाकी तीनों साथियों का विदाई समारोह कर रहे हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी ने उनके साथ व्यक्तिगत क्षणों के experience share किए। मैं खुद इस हाउस में बिल्कुल नया था। हमेशा parents की तरफ इन्होंने मुझे guide किया और इनका पूरा मार्गदर्शन मुझे मिला। पूरे हाउस के अन्दर न केवल अपोज़िशन, अपितु सत्ता पक्ष की तरफ से भी इनको हमेशा आदर की नजर से देखा गया। मैंने इनके चेहरे पर कभी गुस्सा नहीं देखा, हमेशा मुस्कराहट ही देखी। जम्मू-कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और देश के हर मंत्रालय के अन्दर आपका जो experience है, मैं समझता हूँ कि हमेशा उसका लाभ इस हाउस के लोगों को मिला है।

मैं अपनी पार्टी की तरफ से और अपने नेता, श्री अरविन्द केजरीवाल जी की तरफ से आपके सुखद भविष्य की कामना करता हूँ और प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि हमेशा देश के लोगों को आपका आशीर्वाद मिलता रहे। जय हिन्द।

SHRI BINOY VISWAM (Kerala): Sir, Ghulam Nabi Azad*ji*, Mir Mohammad Fayaz*ji*, Nazir Ahmed Laway*ji* and Shamsher Singh Manhas*ji*, four friends from Jammu & Kashmir are taking farewell today from this House. Sir, much has been

done now. There is no chance of replacement for them from that State because that State no more exists. Sir, this is a moment to express our love, affection, gratitude and higher regards for a big leader like Ghulam Nabi Azad*ji*. I, as a small student, first heard his name in 80s, when he was the President of Youth Congress. But, my first opportunity to talk with him occured only in 2018, when I came here as a Member of Parliament. But on the first day itself, he impressed me because he behaved as if he knows me for a long time. Sir, I represent a small party, but, I believe that it is a great party and with that acceptance of Communist Party's greatness, he regarded me always. On many occasions, we differed with him on approaches and politics. But all differences melted down when he spoke with us with a magical ray of hope. Sir, I would like to say one more thing. Tears are really great. When I saw tears in the eyes of hon. Prime Minister, I felt for the first time to meet him once as a human being in his chamber. Till this day, I thought to meet him only as a Prime Minister. But as a Communist, today I felt that I should meet him once as a human being. I believe that those tears of today's are most important and significant thing, and based on that feeling, I bid farewell to Ghulam Nabi Azad*ji* and all the four friends, and wish them all the best.

SHRI G.K. VASAN (Tamil Nadu): Sir, my respects to all the Members who are retiring today. Ghulam Nabi*ji* is the most respected leader in the country who is known from Kashmir to Kanyakumari. He has been an all-weather leader who has adjusted himself to the governance and politics for the interest of the nation and the people. He is respected by one and all, apart from party lines and political lines in the country. I wish him all the best and good health. I wish all the Members a bright future, and I pray to God that Ghulam Nabi*ji* should again do high politics from this august House. Thank you, Sir.

श्री आनन्द शर्मा (हिमाचल प्रदेश): माननीय सभापति महोदय,....*(**व्यवधान**)*

कई माननीय सदस्य : सर, आपका माइक काम नहीं कर रहा है।....*(**व्यवधान**)*...

श्री सभापति : आनन्द शर्मा जी, आप माइक में बोलिए।

एक माननीय सदस्य : आप पीछे आकर इस माइक से बोलिए।

श्री सभापति : आप केवल माइक के लिए ही पीछे जाइएगा।....*(**व्यवधान**)*...

श्री आनन्द शर्मा: माननीय सभापति महोदय, मैं ह्रदय से आपका आभार व्यक्त करता हूं कि आपने मुझे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की तरफ से इस विदाई समारोह में अपनी और अपने दल की बात कहने का अवसर दिया। हमारे चार साथी आज इस सदन से जा रहे हैं, मीर मोहम्मद फ़ैयाज जी, श्री शमशेर सिंह मन्हास जी, श्री नज़ीर अहमद लवाय जी और नेता प्रतिपक्ष, श्री गुलाम नबी आज़ाद जी। यह बड़ा भावुक क्षण है, क्योंकि आज हम वे लम्हे याद कर रहे हैं, वे साल याद कर रहे हैं, जब गुलाम नबी आज़ाद साहब ने इस देश की ख़िदमत के लिए, जन-सेवा के लिए अपना समय दिया था। मैं समझता हूं, जो भावनाएं माननीय प्रधान मंत्री जी ने, माननीय शरद पवार जी ने और माननीय रेड्डी जी ने व्यक्त की हैं, मेरी भी वही भावनाएं हैं। संगठन में और संसद में इनका एक लम्बा अनुभव रहा है, जिससे पूरे देश की जानकारी इन्हें प्राप्त है। हिन्दुस्तान एक बहुत बड़ा देश है, इसकी विविधता है, इसकी विशालता के साथ-साथ बड़ी चुनौतियां भी रहती हैं - मैं कहूं तो उनका आकार भी उतना ही बड़ा होता है। परंतु जैसा कहा गया कि कितने मंत्रालयों का अनुभव - शायद दोनों सदनों में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है, कोई पुराना मंत्री नहीं है, जिसे इतना लम्बा अनुभव संसद, संसदीय प्रणाली, शासन और प्रशासन का रहा हो। लेकिन मैं कह सकता हूं कि कोई भी नहीं है, जिसको इतना गहरा अनुभव संसद की प्रणाली का हो, परम्पराओं का हो। संसद कैसे चलती है, कैसे सत्ता पक्ष में रहकर प्रतिपक्ष से सम्बन्ध बनाना है, कैसे दलों की लकीरों से ऊपर उठकर देश की बात को सोचना है और प्रतिपक्ष के नेता के रूप में भी उनका वही व्यवहार रहा। क्यों यह इतना सम्मान गुलाम नबी आज़ाद साहब का है? उसका एक कारण है, जो सोचना जरूरी है, क्योंकि मेरा इनके साथ संगठन, सरकार और सदन में लम्बा साथ रहा है, दोनों तरफ का - जब हम वहां बैठते थे और अब उनके साथ यहां बैठे हैं। सोती गांव, भदरवाह से एक व्यक्ति, एक नौजवान चलकर यहां आए और पहचान दिल्ली में हो और पहचान करने वाले भी कौन - उस समय का नेतृत्व, श्रीमती इन्दिरा गांधी और दूसरे लोग थे और उसके बाद निरन्तरता रही। जैसा शरद पवार जी ने कहा कि उन्हें महाराष्ट्र ने भी स्वीकार किया, राष्ट्र ने भी स्वीकार किया। संगठन के अंदर कांग्रेस में कोई नहीं, जो हर राज्य के महामंत्री रहे हों, चाहे केरल हो, चाहे तमिलनाडु हो, चाहे महाराष्ट्र हो, चाहे उत्तर प्रदेश हो और जिस राज्य से मैं आता हूं, उत्तर-पूर्व हो, एक व्यक्ति है, जो पूरे हिन्दुस्तान के एक-एक राज्य के संगठन का प्रभारी रहा है, वे गुलाम नबी आज़ाद हैं, दूसरा नहीं है। उसका कारण मैं आपको बताता हूं - वे मेहनतकश हैं, ईमानदारी से काम करते हैं, जो जिम्मेवारी दी जाती है, उसे निभाते हैं, स्पष्टवादी हैं, इनमें शालीनता है, विनम्रता है और ये व्यावहारिक बातों को समझते हैं कि किस तरह से साथियों को और साथ काम करने वालों को सम्मान दिया जाता है।

माननीय सभापति महोदय, मैं आज एक चीज़ सदन में रखना जरूरी समझता हूं, क्योंकि संगठन में एक सम्बन्ध ऐसा है, जो किसी दूसरे का नहीं होगा। मैं जब हिमाचल प्रदेश का अध्यक्ष था, तो ये यहां पर महामंत्री थे और ये भारतीय युवक कांग्रेस के अध्यक्ष हुए तो मैंने महामंत्री बनकर साथ में काम किया। मैं समझता हूं कि यह भी एक बड़ी खुशी की बात है, इत्तिफाक भी है, जब ये विपक्ष के नेता बने, तो मैं उप नेता के रूप में काम करता रहा। मैं इस बात को कहना चाहूंगा कि कोई दिन, कोई समय ऐसा नहीं आया कि जब कोई समस्या सदन के सम्बन्ध में आई हो, संगठन और देश के बारे में, जब मैंने इनसे कोई अच्छी बात नहीं सीखी। इन्होंने हमेशा एक चीज़ कही कि

देखो आनन्द, - यह पुरानी बात है कि यहां अलग-अलग दल और अलग-अलग विचारधाराएं हैं, लेकिन हममें यह क्षमता होनी जरूरी है कि सबको साथ कैसे लेकर चलें और विचारधारा के विरोध को कभी व्यक्तिगत नहीं बनाना चाहिए, पारस्परिक रूप से उसमें कभी कड़वाहट नहीं आनी चाहिए। उसे इन्होंने बखूबी निभाया और कारण यह है कि ये उस समय के हैं, - जो संगठन से आए हुए लोग हैं, वे उसको समझते हैं - जो मेहनत करके, अनुभव लेकर आते हैं, यह मूर्ति बनाने में बहुत समय लगता है। कभी ऐसा समय भी होता है कि जब अचानक एकदम से कई सीढ़ी ऊपर जाने की बात होती है। ये पैदल चलकर, एक-एक सीढ़ी चढ़कर वहां तक पहुंचे हैं, जहां आज विराजमान हैं।

महोदय, सारे सदन की यह भावना है और मैं भी उससे अपने आपको जोड़ता हूं - हम यह उम्मीद करते हैं कि देश की सेवा के लिए इनका अनुभव बेशकीमती है और इनकी सेवा मिलती रहेगी। जब भी जम्मू-कश्मीर में चुनाव होगा, मुझे कोई शक नहीं है कि गुलाम नबी आज़ाद साहब के बारे में हम यह सोच भी नहीं सकते कि वहां के चुनाव में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका नहीं होगी और देश की सेवा के लिए इनकी सेवाएं हमेशा देश को मिलती रहेंगी, धन्यवाद।

श्री सभापतिः धन्यवाद आनन्द जी। Now, retiring Members. श्री नज़ीर अहमद लवाय। कृपया संक्षेप में बोलिए।

श्री नज़ीर अहमद लवाय (जम्मू-कश्मीर)ः मोहतरम-उल-मक़ाम चेयरमैन साहब, आज इस सदन में अपनी 6 साला मुद्दत पूरी करने पर मुझे बोलने का मौका मिला है। 2015 में जब मैं इस सदन का हिस्सा बना, उस वक्त मेरे लीडर मोहतरम मुफ्ती मोहम्मद सईद हयात थे, लेकिन आज वे हमारे बीच में नहीं हैं। उस वक्त हमारी रियासत जम्मू-कश्मीर किसी और मुक़ाम पर थी और आजकल किसी और मुक़ाम पर है। सर, डा. मोहम्मद इक़बाल ने जम्मू-कश्मीर के मुताल्लिक़ जो कहा है, वह मुझे याद है किः

"परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए- जिनाँ हमारा,
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।"

मैंने अपने तमाम लीडरों की बातें सुनीं। राहत इंदौरी की एक ग़ज़ल है, वह मैं कहना चाहता हूँः

"किसने दस्तक दी, ये दिल पर कौन है
आप तो अन्दर हैं, बाहर कौन है?"

मैंने इस सदन में 6 साल गुज़ारे और इन 6 सालों में मैंने जो देखा - जैसे हमारे मोहतरम-उल-मक़ाम वज़ीरे-आज़म ने कहा, जब मैं पहले यहाँ नहीं आया था, यहाँ पहली बार आया, तो मेरी जो जान-पहचान थी, वह सिर्फ जम्मू-कश्मीर में थी, खास कर कश्मीर में सिमटी हुई थी।

लेकिन जब मैं यहाँ आया, यहाँ मुफ्ती साहब की वजह से भेजा गया, तो मैंने हरेक स्टेट का दौरा किया और आज अल्लाह ताला के फज़लोकरम से हिन्दुस्तान के हरेक स्टेट में मेरे दोस्त रहते हैं, मेरी बहनें रहती हैं, मेरे भाई रहते हैं और इस देश के साथ मेरा एक रिश्ता बढ़ गया है। इस देश को जितना मज़बूत किया जाए और मेरे से भी जहाँ मुमकिन होगा, इंशाअल्लाह-ओ-ताला मरते दम तक रहूँगा। मुझे एक शेर याद है, जब हमारे भाई बॉर्डर पर शहीद होते हैं, तो वे कहते हैंः

"कर चले हम फिदा जान-ओ-तन साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।"

जहाँ तक हमारा सिस्टम है, आज 27 साल के बाद यह सदन खाली हो रहा है और मैं अब यही कहूँगा- "अब तुम्हारे हवाले यह जम्मू-कश्मीर साथियो।"

सर, जिस वादिये गुलपोश में मैं रहता हूँ, वहाँ 6 सालों में बहुत सी तब्दीलियाँ रोनुमां हुईं। मुझे इस सदन में बहुत सी शख्सियतों, सियासी रहनुमाओं से मिलने का मौका मिला। हमारे जो अज़ीम लीडर थे, जो हमसे बिछड़े हैं, वे जेटली साहब थे, जिनको मैं घर से जानता हूँ, जिनको मैं जम्मू से जानता हूँ। मैं पोलिटिकल फैमिली से ताल्लुक रखता हूँ। आज मैं इस सदन को बताना चाहता हूँ कि जब मेरे बच्चे छोटे थे, हमारे जम्मू-कश्मीर के जो हालात हैं, मैंने अपने घर में कभी भी अपने बच्चों को नहीं देखा। जब मैंने अपनी बेटी की शादी की, उस वक्त उसको पता चला कि मेरा बाप आज पहली बार घर में है। जैसे हमारे प्राइम मिनिस्टर साहब ने कहा कि गुजरात में क्या हुआ, हमारे घर का एक-एक आदमी विक्टिम बन गया। आज इस संसद में मैं बताना चाहता हूँ कि हमारा जम्मू-कश्मीर जिस दलदल में फँसा हुआ है, इस जम्मू-कश्मीर के लिए आप लोगों को कुछ न कुछ करना है, उसको मरहम लगाना है, उसको adopt करना है, हमारे बच्चों को adopt करना है। हमने यहाँ तक़रीरें सुनी, कभी तेज़तर्रार तक़रीरें सुनीं और ख़ामोश जवाब सुने, तो कभी ख़ामोश तकरीर सुनी, लेकिन उसके जवाब तल्ख़ हुए। मुझे ज़ाती तौर पर कहना है कि जम्मू-कश्मीर में हमने बहुत कुछ खोया है, लेकिन साथ-साथ यहाँ आकर हमने बहुत कुछ पाया भी है। मेरी प्रधान मंत्री जी से और गृह मंत्री जी से गुज़ारिश है कि हमारे जम्मू-कश्मीर में जो पढ़े-लिखे बेरोज़गार लोग हैं - क्योंकि हमारे पास कोई एवेन्यू नहीं है, जम्मू-कश्मीर में हमारा एक ही सेक्टर टूरिज़्म था, वह भी खत्म हो गया है, तो उस जम्मू-कश्मीर को आप adopt करें। वहाँ development की जरूरत है, वहाँ human development की जरूरत है, वहाँ resource development की जरूरत है। अगर हम इस सदन से जायेंगे, तो यहाँ सिवाय डाक्टर साहब के हमारा कोई representative नहीं है - आप लोग हमारे representatives हैं। आप लोगों को जम्मू-कश्मीर की बात करनी है। आप लोग पार्लियामेंट में हैं, लोक सभा में हैं या राज्य सभा में हैं, आप लोगों को हमारी वक़ालत करनी है कि जम्मू-कश्मीर में जो मसले हैं, उन मसलों को कैसे हल किया जाए। अगर हम अपने दिल की बात कहें कि हमारे जख़्म कितने गहरे हैं, जम्मू-कश्मीर और खासकर कश्मीर के लोगों के जख़्म कितने गहरे हैं, मुझे नहीं लगता है कि वे ठीक हो जाएँगे।

12.00 Noon

प्रधान मंत्री जी और आप सबसे मेरी गुज़ारिश है कि वक़्त-वक़्त पर जब भी मुझे अपनी बात कहने का मौका मिला, चाहे धारा-370 हो या 35ए हो, चूँकि इसी संसद ने हमारे जम्मू-कश्मीर को स्पेशल स्टेटस का दर्जा दिया था, इसलिए उसको बचाने के लिए मैंने बहुत विरोध किया। मैंने अपने लीडर्स से बहुत बातें सीखीं। उन लीडर्स में हमारे अज़ीम रहनुमा शरद पवार जी हैं, अरुण जेटली साहब थे, सुषमा स्वराज जी थीं, हमारे आज़ाद साहब तो हैं ही, हमारे साबिक़ वज़ीरेआज़म मनमोहन सिंह साहब हैं, हमारे राम गोपाल जी हैं, यहाँ पर जो हमारी बहुत सी बहनें हैं, ये सब जो तकरीर करते थे, उनसे मैंने सीखा। इंशाअल्लाह मैंने यहाँ से जो सीखा, वह मैं कश्मीर के लोगों को बताना चाहता हूँ कि हमारा जो देश है और हमारे देश के जो सांसद हैं, जो लोग हैं, उनके दिल में हमारे प्रति कितनी हमदर्दी है। जब कोई मसला आया, तब मैंने उसका विरोध किया। उस समय यहाँ पर जो मेरे दोस्त हैं, चाहे वे लेफ्ट साइड के हों या राइट साइड के हों, उन्होंने बोला कि हमारी कहाँ जरूरत है, आप बताइए। अगर कभी हमें कहीं ज़ख्म भी लगा, तो सब लोगों ने वज़ीरेआज़म से मिल कर या होम मिनिस्टर से मिल कर हमारे ज़ख्म को भरने का काम किया। उन्होंने बोला कि हम आपके ज़ख्म को कैसे ठीक कर सकते हैं, आप वह बताइए। संसद हमारे देश की खुशबू है, यह बहुत बड़ी खुशबू है और आज मैं इस खुशबू को लेकर जम्मू-कश्मीर जा रहा हूँ। मैं विदा नहीं हो रहा हूँ, बल्कि आपकी यादें मेरे साथ हैं। मैं जम्मू-कश्मीर में संसद की खुशबू लेकर जा रहा हूँ और इंशाअल्लाह जब तक ज़िंदा हूँ, जैसा कि प्राइम मिनिस्टर साहब ने कहा, तब तक इस कौम की और इस मुल्क की खिदमत करता रहूँगा। आज मेरी अलविदाई तक़रीर है और उम्मीद है कि आने वाले कल में हमारे मसाइल, जो मैंने बोले, उनको संसद में रखा जाएगा।

सर, जिस वक्त मैं यहाँ आया था, उस वक्त जम्मू-कश्मीर और लद्दाख एक रियासत थी और आज वे दो यूटीज़ बन गए हैं। जैसा कि प्राइम मिनिस्टर साहब और होम मिनिस्टर साहब ने इस सदन में मेरे सामने यह वादा किया है कि हम जम्मू-कश्मीर को दोबारा रियासत बनाएँगे और इंशाअल्लाह मुझे उम्मीद है कि वे आज या कल ही ये बिल लाएँगे।

†**جناب نذیراحمد لوائے (جموں وکشمیر):** محترم المقام چئیرمین صاحب، آج اس سدن میں اپنی چھ سالہ مدت پوری کرنے پر مجھے بولنے کا موقع ملا ہے۔ 2015 میں جب میں اس سدن کا حصہ بنا، اس وقت میرے لیڈر محترم مفتی محمد سعید حیات تھے، لیکن آج وہ ہمارے بیچ میں نہیں ہیں۔ اس وقت ہماری ریاست جموں وکشمیر کسی اور مقام پر تھی اور آج کل کسی اور مقام پر ہے۔ سرڈاکٹر محمد اقبال نے جموں وکشمیر کے متعلق جو کہا ہے وہ مجھے یاد ہے کہ ؎

پربت وہ سب سے اونچا، ہمسایہ آسماں کا
وہ سنتری ہمارا، وہ پاسباں ہمارا
گلشن ہے جن کے دم سے، رشک جہاں ہمارا
وہ سنتری ہمارا، وہ پاسباں ہمارا

میں نے اپنے تمام لیڈروں کی باتیں سنیں۔ راحت اندوری کی ایک غزل ہے، میں وہ بتانا چاہتا ہوں،

† Transliteration in Urdu script.

کس نے دستک دی یہ دل پر کون ہے
آپ تو اندر ہیں، باہر کون ہے؟

میں نے اس سدن مین چھ سال گزارے اور ان چھ سالوں میں میں نے جو دیکھا۔ جیسے ہمارے محترم المقام وزیر اعظم نے کہا، جب میں پہلے یہاں نہیں آیا تھا، یہاں پہلی بار آیا، تو میری جو جان پہچان تھی، وہ صرف جموں وکشمیر میں تھی، خاص کر کشمیر میں سمٹی ہوئی تھی۔ لیکن جب میں یہاں آیا، یہاں مفتی صاحب کی وجہ سے بھیجا گیا، تو میں نے ہر ایک اسٹیٹ کا دورہ کیا اور آج اللہ تعالی کے فضل وکرم سے ہندوستان کے ہر ایک اسٹیٹ میں میرے دوست رہتے ہیں، میری بہنیں رہتی ہیں، میرے بھائی رہتے ہیں اور اس دیش کے ساتھ میرا ایک رشتہ بڑھ گیا ہے۔ اس دیش کو جتنا مضبوط کیا جائے اور میرے سے بھی جہاں ممکن ہوگا، انشاء اللہ تعالی مرتے دم تک رہونگا۔ مجھے ایک شعر یاد ہے، جب ہمارے بھائی بارڈر پر شہید ہوتے ہیں، تو وہ کہتے ہیں ؎

کرچلے ہم فدا جان و تن ساتھیوں
اب تمہارے حوالے وتن ساتھیوں

جہاں تک ہمارا سسٹم ہے، آج 27 سال کے بعد یہ سدن خالی ہورہا ہے اور میں اب یہی کہوں گا ؎ اب تمہارے حوالے وطن ساتھیوں۔

سر، جس وادی گلپوش میں میں رہتا ہوں، وہاں چھ سالوں میں بہت سی تبدیلیاں رونما ہوئی ہیں مجھے اس سدن میں بہت سی شخصیتوں، سیاسی رہنماؤں سے ملنے کا موقع ملا۔ ہمارے جو عظیم لیڈر تھے، جو ہم سے بچھڑے ہیں، وہ جیٹلی صاحب تھے جن کو میں گھر سے جانتا ہوں، جن کو میں جموں سے جانتا ہوں۔

میں پالیٹیکل فیملی سے تعلق رکھتا ہوں۔ آج میں اس سدن کو بتانا چاہتا ہوں کہ جب میرے بچے چھوٹے تھے، ہمارے جموں و کشمیر کے جو حالات ہیں،میں نے اپنے گھر میں کبھی بھی اپنے بچوں کو نہیں دیکھا۔ جب میں نے اپنی بیٹی کی شادی کی، اس وقت اس کو پتہ چلا کہ میرا باپ آج پہلی بار گھر میں ہے۔ جیسے ہمارے پرائم منسٹر صاحب نے کہا کہ گجرات میں کیا ہوا، ہمارے گھر کا ایک ایک آدمی وکٹیم بن گیا۔ آج اس سنسد میں میں بتانا چاہتا ہوں ک ہمارا جموں وکشمیر جس دلدل میں پھنسا ہوا ہے، اس جموں وکشمیر کے لیے آپ لوگوں کو کچھ نہ کچھ کرنا ہے، اس کو مرہم لگانا ہے، اس کو اڈاپٹ کرنا ہے، ہمارے بچوں کو اڈاپٹ کرنا ہے۔ ہم نے یہاں تقریریں سنی، کبھی تیز طرار تقریریں سنیں اور خاموش جواب سنے، تو کبھی خاموش تقریریں سنی، لیکن اس کے جواب تلخ ہوئے۔ مجھے ذاتی طور پر کہنا ہے کہ جموں وکشمیر میں ہم نے بہت کچھ کھویا ہے، لیکن ساتھ ساتھ یہاں آکر ہم نے بہت کچھ پایا بھی ہے۔ میری پردھان منتری جی سے اور گرہ منتری جی سے گزارش ہے کہ ہمارے **جموں** وکشمیر میں جو پڑھے لکھے بے روزگار لوگ ہیں۔ کیوں کہ ہمارے پاس کوئی ایوینیو نہیں ہے۔ جموں وکشمیر میں ہمارا ایک ہی سیکٹر ٹورزم تھا، وہ بھی ختم ہوگیا ہے۔ اس جموں وکشمیر کو آپ ایڈاپٹ کریں۔ وہاں development کی ضرورت ہے، وہاں human development کی ضرورت ہے، وہاں resource development کی ضرورت ہے۔ اگر ہم اس سدن سے جائیں گے، تو یہاں سوائے ہمارے ڈاکٹر صاحب کے ہمارا کوئی representative نہیں ہے۔ آپ لوگ ہمارے representatives ہیں۔ آپ لوگوں کو جموں وکشمیر کی بات کرنی ہے۔ آپ لوگ پارلیمنٹ میں ہیں، لوک سبھا میں ہیں یا راجیہ سبھا میں ہیں، آپ لوگوں کو ہماری وکالت کرنی ہے کہ جموں وکشمیر میں جو مسئلے ہیں، ان مسئلوں کو کیسے حل کیا جائے۔ اگر ہم اپنے دل کی بات کہیں کہ ہمارے زخم کتنے گہرے ہیں، جموں وکشمیر اور خاص کر کشمیر کے لوگوں کے زخم کتنے گہرے ہیں، مجھے نہیں لگتا ہے کہ وہ ٹھیک ہوجائیں گے۔

پردھان منتری جی اور آپ سب سے میری گزارش ہے کہ وقت – وقت پر جب بھی مجھے اپنی بات کہنے کا موقع ملا چاہے دھارا 370 ہو یا 35-اے ہو، چونکہ اسی سنسد نے ہمارے جموں و کشمیر کو اسپیشل اسٹیٹس کا درجہ دیا تھا، اس لئے اس کو بچانے کے لئے میں نے بہت مخالفت کی۔ میں نے اپنے لیڈرس سے بہت باتیں سیکھیں۔ ان لیڈرس میں ہمارے عظیم رہنما شرد پوار جی ہیں، ارون جیٹلی صاحب تھے، سشما سوراج جی تھیں، ہمارے آزاد صاحب تو ہیں ہی، ہمارے سابق وزیر اعظم منموہن سنگھہ صاحب ہیں، ہمارے رام گوپال جی ہیں، یہاں جو ہماری بہت سی بہنیں ہیں، یہ سب جو تقریر کرتے تھے، ان سے میں نے سیکھا۔ انشاءاللہ، میں نے یہاں سے جو سیکھا، وہ میں کشمیر کے لوگوں کو بتانا چاہتا ہوں کہ ہمارا جو دیش ہے اور ہمارے دیش کے جو سانسد ہیں، جو لوگ ہیں، ان کے دل میں ہماری تئیں کتنی ہمدردی ہے۔ جب کوئی مسئلہ آیا، تب میں اس کی مخالفت کی۔ اس وقت یہاں پر جو میرے دوست ہیں، چاہے وہ لیفٹ سائڈ کے ہوں یا رائٹ سائڈ کے ہوں، انہوں نے بولا کہ ہماری کہاں ضرورت ہے، آپ بتائیے۔ اگر کبھی ہمیں کہیں زخم بھی لگا، تو سب لوگوں نے وزیر اعظم سے مل کر یا ہوم منسٹر سے مل کر ہمارے زخم کو بھرنے کا کام کیا۔ انہوں نے بولا کہ ہم آپ کے زخم کو کیسے ٹھیک کر سکتے ہیں، آپ وہ بتائیے۔ سنسد ہمارے دیش کی خوشبو ہے، یہ بہت بڑی خوشبو ہے اور آج میں اس خوشبو کو لے کر جموں و کشمیر جا رہا ہوں۔ میں وداع ہو رہا ہوں، بلکہ آپ کی یادیں میرے ساتھ ہیں۔ میں جموں و کشمیر میں سنسد کی

خوشبو لے کر جارہا ہوں اور انشاء اللہ جب تک زندہ ہوں، جیسا کہ پرائم منسٹر صاحب نے کہا، تب تک اس قوم کی اور اس ملک کی خدمت کرتا رہوں گا۔ آج میری الوداعی تقریر ہے اور امید ہے کہ آنے والے کل میں ہمارے مسائل، جو میں نے بولے، ان کو سنسد میں رکھا جائے گا۔

سر، جس وقت میں یہاں آیا تھا، اس وقت جموں و کشمیر اور لدّاخ ایک ریاست تھی اور آج وہ دو یوٹیز۔ بن گئے ہیں۔ جیسا کہ پرائم منسٹر صاحب اور ہوم منسٹر صاحب نے اس سدن میں میرے سامنے یہ وعدہ کیا ہے کہ ہم جموں و کشمیر کو دوبارہ ریاست بنائیں گے اور انشاء اللہ مجھے امید ہے آج یا کل ہی یہ بل لائیں گے۔

MR. CHAIRMAN: Please...

श्री नज़ीर अहमद लवाय : सर, मैं एक मिनट में अपनी बात समाप्त करता हूँ। आज भी जम्मू-कश्मीर में मामूली बारिश होने पर वह बाकी मुल्क से कट जाता है। हम तीन रीजन्स - जम्मू, कश्मीर और लद्दाख में रहते हैं। जम्मू से कश्मीर जाने की जो सड़क है, वह थोड़ी सी बारिश होने पर ही दस-दस दिनों तक बंद हो जाती है। पीयूष गोयल जी ने कहा कि 2022 में वहाँ पर रेल जाएगी। हमारे कश्मीर में रेल कनेक्टिविटी नहीं है और यही हाल जम्मू-कश्मीर से कारगिल तक का है। मुझे उम्मीद है क्योंकि आज हमारा मुल्क secularism और socialism पर मबनी है, हमारे मुल्क के संविधान की यह खूबी है। हम जिस मुल्क में रहते हैं, उसके संविधान की यह खूबी है कि हम सब, यानी हिन्दू, मुस्लिम भाई एक साथ रहते हैं। हममें यह जज़्बा होना चाहिए। कश्मीर में जाएँ, भले ही वहाँ मुस्लिम majority है, लेकिन वे हमारे भाई हैं, कहीं हिन्दू majority है, वे भी हमारे भाई हैं, हमारा ईमान हैं।

सर, अंत में मैं तमाम साथियों का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। मुझे इन छः सालों में इनसे जो मोहब्बत मिली है, उसका मैं शुक्रगुज़ार हूँ। मैं आप सबसे गुज़ारिश करता हूँ कि आप सब कश्मीर आइए, ताकि on ground आप देख लीजिए और वहाँ की वादियों का लुत्फ़ उठाइए, यही मेरी गुज़ारिश है, धन्यवाद।

†جناب نذیر احمد لوائے : سر، میں ایک منٹ میں اپنی بات ختم کرتا ہوں۔ آج بھی جموں و کشمیر میں معمولی بارش ہونے پر وہ باقی ملک سے کٹ جاتا ہے۔ ہم تین ریجنس- جموں، کشمیر اور لدّاخ میں رہتے ہیں۔ جموں سے کشمیر جانے کی جو سڑک ہے، وہ تھوڑی سی بارش ہونے پر ہی دس دس دنوں تک بند ہو جاتی ہے۔ پیوش گوئل جی نے کہا کہ 2022 میں وہاں ریل جائے گی۔ ہمارے کشمیر میں ریل کنیکٹوٹی نہیں ہے اور یہی حال جموں و کشیمر سے کارگل تک کا ہے۔ مجھے امید ہے کیوں کہ آج ہمارا ملک سیکولرزم اور سوشلزم پر مبنی ہے۔ ہمارے ملک کے سنودھان کی یہ خوبی ہے۔ ہم جس ملک میں رہتے ہیں، اس کے سنودھان کی یہ خوبی ہے کہ ہم سب یعنی ہندو، مسلم بھائی ایک ساتھ رہتے ہیں۔ ہم میں یہ جذبہ ہونا چاہئے۔ کشمیر میں جائیں، بھلے ہی وہاں مسلم میجورٹی ہے، لیکن وہ ہمارے بھائی ہیں، کہیں ہندو میجورٹی ہے، وہ بھی ہمارے بھائی ہیں، ہمارا ایمان ہے۔

سر، آخ میں، میں تمام ساتھیوں کا شکریہ اداد کرنا چاہتا ہوں، مجھے ان چھہ سالوں میں ان سے جو محبّت ملی ہے، اس کا میں شکر گزار ہوں۔ میں آپ سب سے گزارش کرتا ہوں کہ آپ سب کشمیر آئیے، تاکہ آن-گرائنڈ آپ دیکھہ لیجئے اور وہاں کی وادیوں کا لطف اٹھائیے۔ یہی میری گزارش ہے، دھنیواد۔

MR. CHAIRMAN: Thank you. God bless you. मीर मोहम्मद फ़ैयाज जी।

मीर मोहम्मद फ़ैयाज (जम्मू-कश्मीर): सर, मैं इस सदन के सभी ज़ीइज़्ज़त मेम्बरान का शुक्रगुज़ार हूँ, जिनके साथ मुझे काम करने का मौका मिला। मैं जम्मू-कश्मीर के लास्ट डिस्ट्रिक्ट,

† Transliteration in Urdu script.

कुपवाड़ा, जो बिल्कुल पाकिस्तान बॉर्डर के साथ है, वहाँ से आता हूँ। मैंने अपनी शुरुआत म्युनिसिपल कमेटी के वार्ड मेम्बर से की, उसका इलेक्शन लड़ा। वह इलेक्शन भी, जैसा कल हमारे प्रधान मंत्री जी ने कहा कि हमने वहाँ पर डीडीसी के इलेक्शन करवाए, जो 70 साल के बाद हुए, तब वह 27 साल के बाद हुए थे। उसके बाद मैं उस म्युनिसिपल कमिटी का चेयरमैन बना, लेकिन मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि मैं इस राज्य सभा में पहुँचूंगा। जब मैं म्युनिसिपल कमिटी से निकला, तब मुझे मुफ्ती साहब ने कहा कि यह छोटा सा शहर है, आप थोड़ा आस-पास के गाँवों में भी जाया करें। मैं कम से कम आठ-दस साल गाँव-गाँव गया, क्योंकि हम mainstream में थे। मैं वर्ष 2014 में जम्मू में था, तब मुझे अचानक महबूबा मुफ्ती जी की कॉल आई कि आप assembly में जाइए, वहाँ मोहम्मद रमज़ान साहब सेक्रेटरी हैं, हमने आपको राज्य सभा में भेजा है, तब मैं गया। पहले मुझे लगा कि यह फोन सही है या नहीं? मैंने किसी से पूछा कि देखिए, यह जो कॉल आई है, यह सच है या मैं सपना देख रहा हूँ? बहरहाल, उन्होंने मुझे यहाँ भेजा। मुफ्ती साहब ने हमें बुलाकर कहा कि मैं आपको राज्य सभा में भेज रहा हूँ, हमारा मुल्क बहुत बड़ा है, महान है, आप वहाँ जाएंगे। मैं आपको जिस सदन में भेज रहा हूँ, वहाँ इस मुल्क की क्रीम है -उनसे आप कुछ सीखेंगे और वह सीखकर आप यहाँ अपने लोगों को बताएंगे। चूँकि आप नौजवान हैं, आप फिर यहाँ आकर अपने लोगों को अपने मुल्क के बारे में बताएंगे, यहाँ के नौजवानों को बताएंगे।

सर, राज्य सभा में काम करना एक बहुत बड़ा तज़ुर्बा था। यहाँ मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला, बहुत कुछ सहना भी पड़ा। मैंने अपने मुल्क और रियासत के मसायल को उबारने की भरपूर कोशिश की, कहीं पर कामयाबी मिली, कहीं पर छल भी हुआ। सर, कश्मीर में हम लोग जो mainstream में हैं, हम देश के लिए काम करते थे, गाँव-गाँव में इस देश का झंडा लेकर जाते थे, लेकिन हम कभी-कभी किसी टीवी चैनल पर देखते हैं कि कोई कहता है कि मैं कश्मीर में जाकर अपने देश का झंडा लगाऊँगा, तब हमें दुख पहुंचता है। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि जब वहाँ separatist boycott की कॉल देते थे, तब हम लोग निकलते थे, लोगों को निकालते थे कि रास्ता यह है, रास्ता वह नहीं है। लेकिन दुख उस वक्त होता है, जब हमें कोई देशद्रोही कहता है, वह हम सह नहीं पाते हैं। जितनी भी mainstream parties हैं -- सर, गलतियाँ हुई हैं और गलतियाँ होती हैं। जब भी जम्मू-कश्मीर के बारे में कोई फैसला लिया गया, तब तत्काल प्रधान मंत्री जी ने जो कहा, हमने उस पर अमल किया। आज हमारे प्रधान मंत्री जी ने इलेक्शन के बारे में कहा कि वहाँ लोग निकले। सर, जो हुआ, वह कहना चाहिए। मैंने 'उज्ज्वला स्कीम' या बाकी स्कीम्स को देखा है। जब मैं म्युनिसिपल कमिटी का चेयरमैन था, तब हमें साल में पाँच लाख रुपए मिलते थे और आज जब मैं अपने लोगों से पूछता हूँ - तो वे बताते हैं कि हमें 14^{th} फाइनेंस कमीशन में पाँच करोड़ रुपए मिले। इसी तरह से, गैस के संबंध में भी है। हमारी जो लेडीज़ थीं, जो ऊपर गाँवों में रहती हैं, वे कल तक जंगल से लकड़ी लाती थीं, लेकिन आज उनके घरों में भी गैस है। सर, जो काम हुआ, वह कहना चाहिए, लेकिन जहाँ हमें यह लगता है कि खासकर इन मामलों में हमारे ऊपर भी कहीं पर उँगली उठी है, तो वहाँ दुख होता है, इसीलिए मैंने कहा कि मैंने अपने मुल्क और रियासत के मसायल को उबारने की भरपूर कोशिश की, कहीं कामयाबी मिली, तो कहीं पर छल भी हुआ, लेकिन यह सिलसिला चलता रहेगा, मैं अपनी अवाम और मुल्क के हकों की जद्दोजहद जारी रखूँगा। मैं इस मौके पर सरकार, ख़ुसूसन अपने प्रधान मंत्री और अपने होम मिनिस्टर साहब से अपील करूँगा कि जम्मू-कश्मीर की अवाम के साथ इन्साफ़ करते हुए रियासत का दर्जा और

स्पेशल स्टेट का दर्जा वापस करें। इससे जम्मू-कश्मीरियों का मुल्क पर भरोसा मज़ीद मज़बूत होगा और यह मुल्क तरक्की की राह पर गामज़न होगा। सर, मैं यहाँ पर छः साल रहा। आपकी वसातत से मैं कनाडा भी गया, लंदन भी गया। आपने मुझे यह मौका दिया, क्योंकि मैंने कभी यह सोचा भी नहीं था कि मैं भी वहाँ जाऊँगा। कुछ साथी यहाँ पर साथ में थे। यहाँ पर पीयूष जी हैं, जेटली साहब थे, नड्डा साहब हैं, जितेन्द्र जी हैं, प्रधान जी हैं, इन सबके पास हम जब भी अपनी स्टेट के मसायल लेकर गए, इन्होंने कभी हमें मना नहीं किया। अगर कुछ मना हुआ या कोई प्रॉब्लम हुई, तो वह हमारे स्टेट में बैठे हमारे ब्यूरोक्रेट्स लोगों की वजह से हुई, यहाँ से हमें कभी किसी चीज़ के लिए मना नहीं किया गया। उसके लिए मैं इन सभी का शुक्रिया अदा करता हूँ।

मैंने यहाँ आज़ाद साहब के साथ भी काम किया। सर, आज़ाद साहब जब चीफ मिनिस्टर थे, तो मैं सोचता था कि मैं आज़ाद साहब से मिलूँ, लेकिन मुझे वहाँ कभी मौका नहीं मिला। यहाँ मैं इनसे कम से कम 500 बार मिला और इनका भाषण भी सुना।

सर, मैं एक बार फिर यह उम्मीद करता हूँ कि सरकार और अपोज़िशन मिलकर जम्मू-कश्मीर के बारे में गैर जानिबदारी से फैसला करे, ताकि उन लोगों को राहत मिले। मैं एक बार फिर सभी सीनियर मेम्बरान का शुक्रगुज़ार हूँ, जिन्होंने हर मौके पर हमारी रहनुमाई की, शुक्रिया।

†**جناب میر محمد فیّاض (جمّوں و کشمیر) :** سر، میں اس سدن کے سبھی ذی عزّت ممبران کا شکرگزار ہوں، جن کے ساتھہ مجھے کام کرنے کا موقع ملا۔ میں جموں و کشمیر کے لاسٹ ڈسٹرکٹ، کپواڑہ، جو بالکل پاکستان بارڈر کے ساتھہ ہے، وہاں سے آتا ہوں۔ میں نے اپنی شروعات میونسپل کمیٹی کے وارڈ ممبر سے کی، اس کا الیکشن لڑا۔ وہ الیکشن بھی، جیسا کل ہمارے پردھان منتری جی نے کہا کہ ہم نے وہاں پر ڈی۔ڈی۔سی۔ کے الیکشن کروائے، جو ستّر سال کے بعد ہوئے، تب وہ ستّائیں سال کے بعد ہوئے تھے۔ اس کے بعد میں اس میونسپل کمیٹی کا چیئرمین بنا، لیکن میں نے کبھی یہ نہیں سوچا تھا کہ میں اس راجیہ سبھا میں پہنچوں گا۔ جب میں میونسپل کمیٹی سے نکلا، تب مجھے مفتی صاحب نے کہا یہ چھوٹا سا شہر ہے، آپ تھوڑا آس پاس کے گاؤں میں بھی جایا کریں۔ میں کم سے کم آٹھہ دس سال گاؤں-گاؤں گیا، کیوں کہ ہم مین-اسٹریم میں تھے۔ میں سال 2014 میں جموں میں تھا، تب مجھے اچانک محبوبہ مفتی جی کی کال آئی کہ آپ اسمبلی میں جائیے، وہاں محمد رمضان صاحب سیکریٹری ہیں، ہم نے آپ کو راجیہ سبھا میں بھیجا ہے، تب میں گیا۔ پہلے مجھے لگا کہ یہ فون صحیح ہے یا نہیں؟ میں نے کسی سے پوچھا کہ دیکھئے، یہ جو کال آئی ہے، یہ سچ ہے یا میں خواب دیکھہ رہا ہوں؟ بہرحال، انہوں نے مجھے یہاں بھیجا۔ مفتی صاحب نے ہمیں بلا کر کہا کہ میں آپ کو راجیہ سبھا میں بھیج رہا ہوں، ہمارا ملک بہت بڑا ہے، مہان ہے، جب آپ وہاں جائیں گے، میں آپ کو جس سدن میں بھیج رہا ہوں، وہاں اس ملک کی کریم ہے، ان سے آپ کچھہ سیکھیں گے اور وہ سیکھہ کر آپ یہاں اپنے لوگوں کو بتائیں گے۔ چونکہ آپ نوجوان ہیں، آپ پھر یہاں آکر اپنے لوگوں کو اپنے ملک کے بارے میں بتائیں گے، یہاں کے نوجوانوں کو بتائیں گے۔

سر، راجیہ سبھا میں کام کرنا ایک بہت بڑا تجربہ تھا۔ یہاں مجھے بہت کچھہ سیکھنے کو ملا، بہت کچھہ سہنا بھی پڑا۔ میں نے اپنے ملک اور ریاست کے مسائل کو ابھارے کی بھرپور کوشش کی، کہیں پر کامیابی ملی، کہیں بھی چھل بھی ہوا۔ سر، کشمیر میں ہم لوگ جو مین-اسٹریم میں ہیں، ہم دیش کے لئے کام کرتے تھے، گاؤں گاؤں میں اس دیش کا جھنڈا لے کر جاتے تھے، لیکن ہم کبھی کبھی کسی ٹی وی چینل پر دیکھتے ہیں کہ کوئی کہتا ہے کہ میں کشمیر میں جاکر اپنے دیش کا جھنڈا لگاؤں گا، تب ہمیں دکھہ پہنچتا ہے۔ میں آپ کو بتانا چاہتا ہوں کہ جب وہاں الگاؤ وادی بائیکاٹ کی کال دیتے تھے، تب ہم لوگ نکلتے تھے، لوگوں کو نکالتے تھے کہ راستہ یہ ہے، راستہ وہ نہیں ہے۔ لیکن دکھہ اس وقت ہوتا ہے، جب ہمیں کوئی دیش دروہی کہتا ہے، وہ ہم سہہ نہیں پاتے ہیں۔ جتنی بھی مین-اسٹریم پارٹیز ہیں – سر، غلطیاں ہوئی ہیں اور غلطیاں ہوتی ہیں۔ جب بھی جموں و کشمیر کے بارے یمں کوئی فیصلہ لیا گیا، تب اس وقت کے پردھان منتری جی نے جو کہا، ہم نے اس پر عمل کیا۔ آپ ہمارے پردھان منتری جی نے الیکشن کے بارے میں کہا کہ وہاں لوگ نکلے۔ سر، جو ہوا، وہ کہنا چاہئے۔ میں نے اجّول اسکیم یا باقی اسکیمس کو دیکھا ہے۔ جب میں میونسپل کمیٹی کا چیئرمین تھا، تب ہمیں سال میں پانچ لاکھہ ملتے تھے اور آج

† Transliteration in Urdu script.

جب میں اپنے لوگوں سے پوچھتا ہوں، تو وہ بتاتے ہیں کہ ہمیں 14 ایف.سی. میں پانچ کروڑ روپے ملے۔ اسی طرح سے گیس کے سمبندھہ میں بھی ہے۔ ہماری جو لیڈیز تھیں، جو اوپر گاؤں میں رہتی ہیں، وہ کل تک جنگل سے لکڑی لاتی تھیں، لیکن آج ان کے گھروں میں بھی گیس ہے۔ سر،جو کام ہوا، وہ کہنا چاہئے، لیکن جہاں ہمیں یہ لگتا ہے کہ خاص کر ان معاملوں میں ہمارے اوپر بھی کہیں پر انگلی اٹھی ہے، تو وہاں دکھہ ہوتا ہے، اسی لئے میں نے کہا کہ اپ ملک اور ریاست کے مسائل کو ابھارنے کو بھرپور کوشش کی، کہیں کامیابی ملی، تو کہیں پر چھل بھی ہوا، لیکن یہ سلسلہ چلتا رہے گا، میں اپنی عوام اور ملک کے حقوں کی جدوجہد جاری رکھوں گا۔ میں اس موقع پر سرکار خصوصا اپنے پردھان منتری، ہوم منسٹر صاحب سے اپیل کروں گا کہ جموں وکشمیر کی عوام کے ساتھہ انصاف کرتے ہوئے ریاست کا درجہ اور اسپیشل اسٹیٹس کا درجہ واپس کریں۔ اس سے جموں و کشمیریوں کا ملک پر بھروسہ مضبوط ہوگا، ان کا مزید مضبوط ہوگا اور یہ ملک ترقی کی راہ پر گامزن ہوگا۔

سر، میں، یہاں پر چھہ سال رہا۔ آپ کی وساطت سے میں کناڈا بھی گیا، لندن بھی گیا۔ آپ نے مجھے یہ موقع دیا، کیوں کہ میں نے کبھی یہ سوچا بھی نہیں تھا کہ میں بھی وہاں جاؤں گا۔ کچھہ ساتھی یہاں پر ساتھہ میں تھے۔ یہاں پر پیوش جی ہیں، جیٹلی صاحب تھے، نڈّا صاحب ہیں، جتیندر جی ہیں، پردھان منتری جی ہیں، ان سب کے پاس ہم جب بھی اپنی اسٹیٹ کے مسائل لے کر گئے، انہوں نے کبھی ہمیں منع نہیں کیا۔ اگر کچھہ منع ہوا یا کوئی پرابلم ہوئی، تو وہ ہماری اسٹیٹ میں بیٹھے ہماری بیوروکریٹس لوگوں کی وجہ سے ہوئی، یہاں سے ہمیں کبھی کسی چیز کے لئے منع نہیں کیا گیا۔ اس کے لئے میں ان سبھی کا شکریہ ادا کرتا ہوں۔

میں نے یہاں آزاد صاحب کے ساتھہ بھی کام کیا۔ سر، آزاد صاحب جب چیف منسٹر تھے، تو میں سوچتا تھا کہ میں آزاد صاحب سے ملوں، لیکن مجھے وہاں کبھی موقع نہیں ملا۔ یہاں میں ان سے کم سے کم 500 بار ملا اور ان کا بھاشن بھی سنا۔

سر، میں ایک بار پھر یہ امید کرتا ہوں کہ سرکار اور اپوزیشن مل کر جموں و کشمیر کے بارے میں غیر جانبداری سے فیصلہ کرے، تاکہ ان لوگوں کو راحت ملے۔ میں ایک بار پھر سبھی سینئر ممبران کا شکرگزار ہوں، جنہوں نے ہر موقعے پر ہماری رہنمائی کی، شکریہ۔

श्री शमशेर सिंह मन्हास (जम्मू-कश्मीर)**:** आदरणीय सभापति जी, जिस दिन मैं इस सदन में आया, उससे पहले जब आपातकाल, यानी इमरजेंसी लगी थी, उससे पूर्व से ही मैं एक सामाजिक कार्यकर्ता था, समाज का काम करता था। वह एक ऐसा समय था कि मुझसे पीछे नहीं रहा गया और मुझे जेल-यात्रा करनी पड़ी। उसके बाद, मैं सीधे कहूँगा कि मैंने आरएसएस के कार्यकर्ता के रूप में और 1982 से 1990 तक प्रचारक के रूप में काम किया। जब मैं वापस गया, तो 1990 में भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुआ। मुझे भारतीय जनता पार्टी में प्रदेश महामंत्री के रूप में आदरणीय नड्डा जी के साथ कार्य करने का मौका मिला। मैं यह मानकर चल सकता हूँ कि इस सदन में, केन्द्र में और भारतीय जनता पार्टी के जितने भी कार्यकर्ता हैं, उनमें से कम से कम 60 प्रतिशत से ज्यादा लोग उस कार्यकाल के हैं। यहाँ नक़वी जी बैठे हुए हैं, रवि शंकर जी यहाँ नहीं हैं, प्रहलाद पटेल जी, फिर अपने जी. किशन रेड्डी जी हमारे अध्यक्ष थे, इन सबके साथ मुझे काम करने का मौका मिला। यहाँ आने के बाद मुझे लगा कि मैं कम से कम इस सदन में तो नया आया हूँ, लेकिन मैं कार्यकर्ताओं के बीच में नया नहीं हूँ। दूसरी बात यह कि मैंने कभी चुनाव नहीं लड़ा। मैंने न कभी पार्षद का चुनाव लड़ा, न कभी म्युनिसिपेलिटी का चुनाव लड़ा और न कभी पंचायत का चुनाव लड़ा, बल्कि मैंने एक सामाजिक कार्यकर्ता होने के नाते कार्य किया।

सर, मुझे अरुण जेटली जी की याद आ रही है। वर्ष 2014 में उन्होंने मुझसे कहा कि तुम विधान सभा का चुनाव क्यों नहीं लड़ते? मैंने साफ शब्दों में कह दिया कि मैं चुनाव नहीं लड़ूंगा, मेरा चुनाव लड़ने का मन नहीं है, मेरा सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में काम करने का मन है। आदरणीय प्रधान मंत्री जी, उस समय के हमारे केन्द्रीय नेतृत्व में आदरणीय राजनाथ सिंह जी आदि ने विचार किया कि इस व्यक्ति को भेजना चाहिए। इन सबकी सहमति बनने के उपरान्त पहली बार जम्मू-कश्मीर से राज्य सभा में अगर किसी को सांसद के रूप में भेजने का प्रयास

किया, तो वह मौका मुझे मिला। पहली बार जम्मू-कश्मीर से भारतीय जनता पार्टी के सांसद के रूप में मुझे वह मौका मिला। मैंने 6 वर्ष का अपना कार्यकाल निकालने का प्रयास किया, जितना मुझसे हो सका, जितनी मेरी क्षमता थी, जितनी मेरी बुद्धि थी और जिस प्रकार का मैंने सामाजिक कार्य किया था, वह करने का मैंने प्रयास किया। आदरणीय प्रधान मंत्री जी उस समय संगठन के महामंत्री हुआ करते थे, वे जम्मू-कश्मीर, हिमाचल वगैरह के इंचार्ज थे। वे जब भी जम्मू आते थे, मुझे समझाते थे, क्योंकि मोहल्ले में मेरी भाषा में थोड़ी सी तीव्रता या उग्रता रहती थी, तो वे अक्सर मुझे कहा करते थे कि आप अपने स्वभाव को थोड़ा सा ठीक करने का प्रयास कीजिए। इसलिए मैंने सारी बातें सीखने के उपरान्त समाज के बीच में रहकर समाज का कार्य कैसे किया जाता है, वह भी सीखा और मैं पूरे जम्मू-कश्मीर में विभिन्न दायित्वों को निभाते हुए प्रदेश का अध्यक्ष भी बना। Entire जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में कोई ऐसा क्षेत्र नहीं बचा होगा, कोई ऐसी तस्वीर नहीं बची होगी, कोई ऐसा जिला नहीं बचा होगा, जहां मैं नहीं गया हूं। मैं 13 वर्ष के कार्यकाल में जम्मू-कश्मीर में लगातार घूमा हूं, मैंने वहां की परिस्थिति को समझा और वहां के समाज को समझने का प्रयास किया है। मुझे उस प्रयास का अनुभव यहां दिखाने का मौका मिला। वहां हालात बहुत गंभीर थे। जिस प्रकार केन्द्र से वहां सारी चीज़ें जाती थीं, वहां तक पहुंचने में कई रुकावटें और hurdles बनती थीं - अगर जम्मू ignore होता था या लद्दाख ignore होता था, तो उस समय भी मैंने कई आंदोलन प्रारम्भ किए और आंदोलन करने के उपरान्त मैंने कुछ कार्य करने का भी प्रयास किया। मैं एक बात अवश्य बोलना चाहूंगा कि क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष फारुक अब्दुल्ला जी थे और क्रिकेट एसोसिएशन का जो पैसा जाता था - सर्वप्रथम अगर किसी ने आवाज़ उठायी होगी और आंदोलन किया होगा, तो वह मेरे अध्यक्ष कार्यकाल में हुआ, मैंने 72 दिन की भूख हड़ताल की थी। डा. जितेन्द्र सिंह जी यहां बैठे हुए हैं, ये गवाह हैं, ये उस समय डॉक्टर हुआ करते थे, डॉक्टर होने के उपरान्त मैंने इनको आग्रह किया था कि आप भी भारतीय जनता पार्टी में आइए, मैंने इनको भारतीय जनता पार्टी में शामिल किया था और आज ये यहां पर पहुंचे हैं। मैं ऐसे एक कार्यकर्ता नहीं, बल्कि सैकड़ों कार्यकर्ताओं के नाम बता सकता हूं, जो जम्मू-कश्मीर में कार्य कर रहे हैं। इस प्रकार ये सारी चीज़ें करने के उपरान्त, जिस प्रकार जम्मू-कश्मीर जैसा छोटा सा प्रदेश, वह न केवल प्रदेश तक सीमित था, मुझे चुनावों की दृष्टि से उन दिनों बाकी राज्यों में भी जाना पड़ता था, लेकिन यहां आकर मैंने सदन तो देखा ही, सदन के बाहर भी मुझे पूरा भारतवर्ष दिखायी देता है। आज हम भारतवर्ष में बैठे हुए हैं। जम्मू-कश्मीर भारत माँ की मुकुटमणि है, मैं मुकुटमणि से आता हूं और भारत के बीच में बैठा हुआ हूं। मुकुटमणि की सेवा कैसे हो सकती है, उस दायित्व का निर्वाह कर रहा हूं। इसको रिटायर तो नहीं कहा जा सकता, क्योंकि मैंने पहले भी समाज का काम किया है और आगे आने वाले दिनों में भी करूंगा। मैं लोगों की समस्याओं को लेकर जिस प्रकार से जूझता रहा हूं, आगे भी जूझने का प्रयास करूंगा।

हमारे आज़ाद साहब भी जम्मू-कश्मीर से आते हैं। इन्होंने पूरे देश में अपना एक मुक़ाम हासिल किया है। अगर इनका गांव देखा जाए, तो वह बहुत छोटा सा है, जो गंदोह तहसील में आता है। अगर आज़ाद साहब वहां से उठकर यहां पहुंच सकते हैं, तो इन्होंने इसके लिए कितनी मेहनत-मशक्कत की होगी, यह हम सबके सामने है। आज इन्होंने इतना मुक़ाम हासिल किया है कि पूरा भारतवर्ष ही नहीं, विश्व में भी इनको लोग जानते हैं। वहां पर इनकी वाह-वाही कर रहे हैं और तारीफ कर रहे हैं। मैं इनका आभार व्यक्त करता हूं। कई बार हमारी नोंक-झोंक भी होती थी।

कई मुद्दों पर हमारा आपस में तालमेल नहीं बैठता होगा और मैंने कुछ कटाक्ष भी किए होंगे, लेकिन इन्होंने बड़ी सहनशीलता से सहन करने का प्रयास किया है। आने वाले दिनों में जैसे भी हो सकेगा, आदरणीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में, आदरणीय अमित शाह जी के नेतृत्व में जिस प्रकार का कार्य मुझे मिलेगा, जो दायित्व मिलेगा, मैं उसको निर्वहन करने की कोशिश करूंगा। मैं रिटायर राज्य सभा से हो रहा हूं, अपने जीवन से नहीं हो रहा हूं, जीवन आगे भी चलेगा और हम आगे भी बढ़ेंगे। मैं इन्हीं शब्दों के साथ आप सबका आभार व्यक्त करता हूं।

श्री सभापति : श्री शमशेर सिंह मन्हास जी, आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं। डिप्टी चेयरमैन।

श्री उपसभापति : आदरणीय सभापति जी, आज माननीय LoP श्री गुलाम नबी आज़ाद साहब, माननीय मीर मोहम्मद फ़ैयाज जी, माननीय शमशेर सिंह मन्हास जी और माननीय नज़ीर अहमद लवाय जी इस सदन से रिटायर हो रहे हैं। आप में से कई लोगों के साथ मुझे समितियों में भी साथ रहने का मौका मिला है। इसके साथ ही मुझे देश में और देश के बाहर भी घूमने का मौका मिला है। आपकी आत्मीयता, समाज के बारे में सरोकार, आपकी जागरूकता, सबसे मैं व्यक्तिगत तौर से प्रभावित हूं। मैं आपके भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूं। आप स्वस्थ रहें, दीर्घायु हों और हमेशा देश के लिए आपकी सक्रियता बनी रहे, यह कामना करता हूं। मेरा यह सौभाग्य था कि मैं माननीय LoP साहब के साथ बैठता था। मैं कहना चाहूंगा कि आज माननीय प्रधान मंत्री जी ने जो कुछ कहा, वह इतिहास का वह अध्याय है, जिससे आने वाली पीढ़ियां सबक लेंगी कि किस तरह से गुलाम नबी साहब के 'आज़ाद' के कद तक पहुंचने के लिए किस तरह की साधना से राजनीति गुज़ारनी होती है। चन्द्रशेखर जी कहा करते थे कि 10 प्रतिशत राजनीति का हर व्यक्ति का 90 प्रतिशत मानवीय पक्ष होता है। हम 10 फीसदी राजनीति का पक्ष तो जानते थे, एक ह्यूमन के रूप में किस तरह से आज़ाद साहब हैं, वह जो हमने आज जाना, वह भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रेरित करेगा।

माननीय सभापति जी, मैं दो-तीन चीज़ें कहना चाहूंगा। आज़ाद साहब जो-जो कहते हैं, मैं उसको बहुत ध्यान से पढ़ता हूं। पिछले दिनों उन्होंने नई पीढ़ी की राजनीति और पांच सितारा की राजनीति के बारे में कहा। मैं उनका अतीत जानता हूं। मैं पत्रकार के तौर पर उस पीढ़ी में जयप्रकाश जी के आंदोलन से प्रभावित होकर बहुत ध्यान से नेताओं के बयान पढ़ा करता था। जहां तक मेरी जानकारी है, माननीय LoP साहब ने ब्लॉक स्तर के कार्यकर्ता से काम शुरू किया है। उसके बाद वे ब्लॉक के अध्यक्ष बने, राज्य की राजनीति में गए, बाद में देश की राजनीति में आए और फिर एक साथ काफी बड़े पदों को संभाला। आदरणीय पवार साहब ने सही कहा है कि हमारे बीच इतने सम्पन्न अनुभव का कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है। मैं यह भी कहना चाहूंगा कि स्वास्थ्य मंत्री के रूप में उनके कई काम बहुत उल्लेखनीय रहे हैं, जिनमें 'नेशनल रूरल हेल्थ मिशन' और ' नेशनल अर्बन हेल्थ मिशन' हैं। मेडिकल कॉलेजेज़ की स्थापना के बारे में हम सब लोग सुनते थे और सिविल एविएशन्स से लेकर कई चीज़ों में उन्होंने हमेशा एक दूरदृष्टि के साथ काम किया। मैं इस संसद में 2014 में आया और तब मैं विपक्ष में बैठता था। मैंने तब खड़े होकर कहा था, जो आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने कहा कि आज़ाद साहब से सीखना चाहिए, तो मैंने कहा था, कि मैं उनसे सीखता हूं। मैं उनसे, उनकी गरिमा से, उनकी मर्यादा से, वाणी में संयम,

व्यवहार और आचरण में गंभीरता, संसदीय मर्यादा का समृद्ध अनुभव, अध्ययनशीलता सीखता हूं। जब मैं उनके साथ बैठता था, उन्होंने बताया कि questions and answers कैसे देखने चाहिए? उनमें क्या चीज़ें होती हैं, तो एक-एक पग मेरा संसदीय अनुभव का रहा। सर, मैं कह सकता हूं कि उस पद पर बैठते हुए सदन को चलाने में जो सुझाव, जो मार्गदर्शन और कभी कठिन समय आया, उसमें किस तरह से रास्ता निकले, वह काम मैंने आज़ाद साहब का देखा। सचमुच जब मौका आता था, तब वे सीमा से उठकर हमेशा देश के बारे में सोचने वाले व्यक्ति रहे हैं। खास तौर से एक पक्ष कहकर मैं यह उल्लेख करना चाहूंगा कि उन्होंने पूरे देश को जम्मू-कश्मीर के बारे में जिस तरह से कनेक्ट किया, वह उनका अद्भुत और समृद्ध पक्ष है। सर, मेरी कामना है कि वे दीर्घायु हों, स्वस्थ हों, उनका शालीन व्यवहार, मर्यादा और उनके अनुभव से हम भविष्य में भी सीखेंगे। यह कार्यकाल में अल्पविराम, मामूली-सा विराम लग रहा है। मुझे यह उम्मीद है कि बहुत जल्द हम पुनः उनकी आवाज़ को उसी मर्यादा के साथ इस सदन में सुनेंगे, यही मेरी कामना है। आप सब के भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं, धन्यवाद।

विपक्ष के नेता (श्री गुलाम नबी आज़ाद): माननीय चेयरमैन सर, आपने, माननीय प्रधान मंत्री जी ने, माननीय डिप्टी चेयरमैन साहब ने और मेरे उस तरफ के या इस तरफ के, सत्ताधारी पार्टी के या विपक्ष के जितने भी साथी यहां हैं और विशेष रूप से आपने और माननीय प्रधान मंत्री जी ने जिस तरह से भावुक होकर मेरे बारे में कुछ शब्द बताए हैं, मैं बड़ी सोच में पड़ गया कि क्या कहूं? इन 41 वर्षों में जो मेरा legislative career रहा- 28 साल इस हाउस में, 10 साल लोक सभा में, तीन साल जम्मू-कश्मीर असेम्बली में, तो यह कहूंगा कि मैं महाराष्ट्र से जीत कर आया। मैं कभी इधर से निकला- इधर डूबा, उधर निकला, उधर डूबा, इधर निकला- यह मेरा जीवन रहा और संघर्ष का ज़माना रहा। मैं आज बहुत सारी चीज़ों को छोटा करने के लिए कुछ शेरों में ही अपनी बात खत्म कर देना चाहता हूं। शायर जो होते हैं, उनके शेरों में एक बड़ी ताकत होती है कि हम लोग अगर दस घंटे का भाषण दें, तो वे दो शेर में ही उसको खत्म कर देते हैं। मैं उसका फायदा उठाना चाहता हूं। अगर मैं 41 साल के अनुभव के बारे में कहना चाहूंगा, तो बहुत समय लगेगा, कई हफ्ते और महीने लगेंगे। मैं अपनी बात वहां से शुरू करूंगा, जिस बात से मैंने स्टूडेंट लाइफ में अपना पोलिटिकल करियर शुरू किया। मैं जम्मू से हूं, लेकिन मेरा डिस्ट्रिक्ट/शमशेर सिंह जी जानते हैं, मुस्लिम मेजॉरिटी डिस्ट्रिक्ट - उसका असर कश्मीर का ज्यादा होता है, जम्मू का असर कम पड़ता है - विशेष रूप से मुस्लिम्स में। उसके बाद कॉलेज और यूनिवर्सिटी तो मैं कश्मीर में ही पढ़ा। मैं गांधी जी को पढ़ता था, नेहरू जी को पढ़ता था, मौलाना आज़ाद जी को पढ़ता था - इन तीनों के बारे में पढ़ता था। मैंने स्कूल से लेकर जो देशभक्ति सीखी है, वह देशभक्ति आज उन नौजवानों की नज़र में, जो सियाचिन में हैं, जम्मू-कश्मीर में कई दशकों से हैं - ठंड में हैं, बर्फ में हैं - उनके नाम से मैं शुरू करता हूं।

"खून की मांग है इस देश की रक्षा के लिए,
मेरे नज़दीक यह क़ुरबानी बहुत छोटी है, दे दो।"

मेरे मन में यह बात बचपन से और स्कूल से रही। जब मैं कश्मीर के सबसे बड़े कॉलेज एसपी कॉलेज, श्री प्रताप कॉलेज में पढ़ता था, मुझे याद है कि हमारे कॉलेज में 14 अगस्त भी मनाया जाता था और 15 अगस्त भी मनाया जाता था। 14 अगस्त तो आप जानते हैं कि किसके लिए मनाया जाता है और majority उनकी थी, जो 14 अगस्त मनाते थे। बहुत कम minority थी, दर्जनों में थी, जिसमें मैं भी था और मेरे दोस्त थे, जो 15 अगस्त में स्टाफ और प्रिंसिपल के साथ रहते थे। उसके बाद हम एक हफ्ता कॉलेज नहीं जाते थे, क्योंकि पिटाई होती थी। उस वक्त से निकलकर हम इस सोच में आए हैं, जिस सोच में आज हम सब हैं और मुझे इस बात की खुशी है कि उस सोच को बहुत सारे लोगों ने - और मैं दूसरी पार्टीज़ को भी बधाई देता हूं, चाहे वहां नेशनल कॉन्फ्रेन्स हो, पीडीपी हो, बीजेपी तो शुरू से ही कौमी धारा की पोलिटिक्स में थी, वह भी आहिस्ता-आहिस्ता बड़े पैमाने पर आए और कश्मीर आगे बढ़ा। मेरी हमेशा यह सोच रही कि हम बड़े खुशकिस्मत थे - मैं तो आज़ादी के बाद पैदा हुआ, लेकिन आज मैं गूगल के ज़रिए पढ़ता हूं, देखता हूं, सुनता हूं और यूट्यूब के ज़रिए भी पढ़ता हूं - मैं उन खुशकिस्मत लोगों में हूं, जो पाकिस्तान कभी नहीं गए। लेकिन जब मैं पढ़ता हूं कि पाकिस्तान के अंदर किस तरह के हालात हैं, तो मुझे गौरव महसूस होता है, मुझे फख्र महसूस होता है कि हम हिन्दुस्तानी मुसलमान हैं, बल्कि मैं आज कहूंगा कि विश्व में किसी मुसलमान को अगर गौरव होना चाहिए, तो वह हिन्दुस्तान के मुसलमान को गौरव होना चाहिए। हमने पिछले 30-35 सालों से अफगानिस्तान से लेकर, इराक से लेकर और कुछ सालों पहले से देखा कि किस तरह से मुस्लिम देश एक-दूसरे के अंदर और एक-दूसरे से लड़ाई करते हुए खत्म हो रहे हैं। वहां हिन्दू तो नहीं हैं, वहां कोई क्रिश्चियन तो नहीं हैं, वहां कोई दूसरा तो नहीं है, जो लड़ाई कर रहा है, वे आपस में लड़ाई कर रहे हैं। यह सुनने में आया है कि हमदर्द तो पाकिस्तान के लोग बहुत थे, मैं कभी वहां नहीं गया, लेकिन जो समाज में बुराइयां हैं - हमें दूसरे मुल्क के बारे में नहीं कहना चाहिए, लेकिन हम गौरव से यह कह सकते हैं कि हमारे मुसलमानों में वे बुराइयां खुदा न करे कि कभी भी आएं। आज हम गौरव से यह कह सकते हैं, लेकिन यहां majority community को भी दो कदम आगे बढ़ने की जरूरत है, तभी minority community दस कदम आगे बढ़ेगी। मेरी हमेशा से यह सोच रहेगी। मुझे पता नहीं कि शमशेर सिंह जी ने चीफ मिनिस्टर बनने के बाद की मेरी पहली पब्लिक मीटिंग के बारे में कभी सुना है या नहीं। मैं जब सीएम बना तो आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सीएम के तौर पर मैंने पहली पब्लिक मीटिंग कहां ली होगी। वह मैंने सोपोर में ली थी, जहां कई दशकों से पब्लिक मीटिंग कोई नहीं कर सकता और आज भी नहीं कर सकता। वह मीटिंग शहर में तो नहीं की, लेकिन उसी Constituency में की, जहां के गिलानी साहब हैं, जो गिलानी साहब वहां से तीन दफा एमएलए चुनकर आए थे। उस पब्लिक मीटिंग में मैंने क्या कहा था कि मेरी सरकार जम्मू-कश्मीर के लोगों की सरकार होगी और अगर मेरी सरकार का कोई मंत्री धर्म की बुनियाद पर, मज़हब की बुनियाद पर और पार्टी की बुनियाद पर इंसाफ करेगा, तो मुझे शर्म आएगी कि ऐसे मंत्री या ऐसे अफसर मेरे साथ काम कर रहे हैं। मैं उसी सोच का हूं और मैं जहां भी गया वहां मुझे लोगों का बहुत प्यार मिला है। आनन्द शर्मा जी ने जैसे बताया और शरद जी ने जैसे बताया कि उनको तो बहुत अरसे से जानता हूं। मुझे सौभाग्य मिला और उसके लिए मैं बधाई देना चाहता हूं और धन्यवाद करता हूं - आज वे ज़िंदा नहीं हैं - इंदिरा गांधी जी का, संजय गांधी जी का, जिनकी वजह से मैं यहां पहुंचा हूं । मुझे तकरीबन पांच अध्यक्षों के साथ काम करने का

अवसर मिला और चार या पांच प्राइम मिनिस्टर्स के मंत्रिमंडल में काम करने का अवसर मिला, लेकिन इसके साथ ही मुझे हिन्दुस्तान के सभी 35-36 स्टेट्स/यूटीज़ में इंचार्ज के रूप में काम करने का अवसर भी मिला। आज मेरे सभी दोस्त हैं, भाई-बहन हैं और मैं यह कह सकता हूं कि अंडमान से लेकर लक्षद्वीप तक और कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, सिक्किम से लेकर गुजरात तक वे फैले हुए हैं। मैंने यही चीज़ कमाई है। मैंने इस पार्लियामेंट से बहुत कुछ सीखा है। मुझे पार्टी के जनरल सेक्रेटरी के रूप में और मंत्री के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। मुझे यह अवसर इंदिरा गांधी जी के वक्त में मिला, राजीव जी के वक्त में मिला, सोनिया गांधी जी के वक्त में मिला और राहुल गांधी जी के वक्त में मिला। शायद बहुत कम लोगों को यह अवसर प्राप्त हुआ होगा कि जो अपनी उम्र से दोगुनी उम्र के लोग थे, बड़े लीडर थे, उनके साथ पार्टी की तरफ से मुझे मीटिंग करने का मौका मिला । मुझे कई पार्टियों के साथ नेगोसिएशन करने का मौका मिला, उनमें ज्योति बसु जी थे, करुणानिधि जी थे। मैंने जयललिता जी के साथ अलायंस किया, करुणाकरण जी के साथ किया, चन्द्रशेखर जी के साथ किया, देवीलाल जी के साथ किया, मुलायम सिंह यादव जी के साथ किया और प्रकाश सिंह बादल जी के साथ अलायंस नहीं किया, लेकिन जब मैं गृह राज्य मंत्री था तब कई मीटिंग्स उनके साथ हुईं, उस समय मैं पंजाब अकॉर्ड और असम अकॉर्ड का implementation देखता था। इसके अलावा आई.के. गुजराल साहब से, शिबू सोरेन जी से, शिहाब थंगल जी से, मूपनार जी से, फारुक साहब से, मुफ्ती साहब से, इन सभी लोगों के साथ कई दफा मुझे अलायंस करने का अवसर मिला। यही वजह है कि यहां भी मैंने उसी तरह से काम चलाया। मैं तीन प्राइम मिनिस्टर्स के साथ में पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर रहा हूं। मैं उस बात को भूल नहीं सकता कि इंदिरा जी फोतेदार जी को और मुझे बताती थीं । फोतेदार जी पोलिटिकल सेक्रेटरी थे और मैं यूथ कांग्रेस का प्रेज़िडेंट था - उन्होंने कहा कि ज़रा अटल जी से भी सम्पर्क में रहा करो - उन्होंने बीजेपी नहीं कहा - अटल जी से सम्पर्क में रहा करो, वे इस सोच की थीं। बाद में राजीव जी जब प्राइम मिनिस्टर बने, तो उन्होंने कहा कि विपक्ष के जो लोग हैं, उनके पास तो दो एम.पीज़ हैं, हमारा इतना बहुमत है - उनको भी तो अपनी Constituency का काम करना होता होगा, उनसे भी जरा पूछा करो। जब मैं राजीव गांधी जी के वक्त में पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर बना, तो फिर एक दफा उन्होंने याद दिलाया कि आप बहुत सारे काम अपनी पार्टी के करते हो, क्या विपक्ष के भी कुछ काम करते हो? मैंने कहा कि हां, मैं बिल्कुल उनसे पूछता हूं और वे जो-जो काम बताते हैं, हम उनको करते हैं, हर बात आपको बताने की जरूरत नहीं है, हम अपने लेवल पर करते हैं। बाद में मैंने यही चीज़ माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी से सीखी। मैं 1991 से 1996 तक पांच साल पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर रहा, इसके अलावा और भी पोर्टफोलियो मेरे पास थे। उस समय अटल जी विपक्ष के नेता रहे। हमारे पास बहुमत नहीं था और अलायंस भी नहीं था, माइनॉरिटी गवर्नमेंट थी और उस माइनॉरिटी गवर्नमेंट में अटल बिहारी वाजपेयी जी विपक्ष के नेता हों, तो आप समझ सकते हैं कि हाउस को चलाना कितना मुश्किल हो सकता है, लेकिन मैं कहूंगा कि सबसे आसान हाउस चलाना उन पांच साल में मुझे अटल जी की लीडरशिप में मिला। मैंने उनसे सीखा कि किस तरह से हल निकाला जा सकता है - विपक्ष की भी बात रहे और सरकार की भी बात रहे। मैंने अपने LoP के ज़माने में यह कोशिश की कि हम यहां आए हैं, लोगों ने हमें कानून बनाने के लिए चुना है, लोगों ने हमें कई मसलों का समाधान निकालने के लिए, हल निकालने के लिए चुना है, उनकी

मुश्किलात को दूर करने के लिए चुना है। उनके लिए रोजगार पैदा करना, एम्प्लॉयमेंट पैदा करना, डेवलपमेंट करना, विकास करना, सड़कें, नहरें, स्कूल-कॉलेज, अस्पताल बनाना, बिजली की पैदावार करना - ये सब काम करते हैं। अगर हम हर वक्त आपस में ही लड़ते रहे, झगड़ते रहे, तो वे कानून पास नहीं होंगे और हम पर से लोगों का विश्वास उठ जाएगा, इसलिए मैं अपने साथियों को भी समझाता था कि इसको मिक्स करो। एकाध दिन विरोध दिखाओ, एकाध दिन झगड़ा करो और बाकी दिन discussion करो। मैंने यह हमेशा प्रयास किया और मैं इसके लिए अपने उस तरफ के साथियों और इस तरफ के सभी लीडर्स का धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने उस प्रयास में अपना पूरा सहयोग दिया। गृह मंत्री जी को स्टेटमेंट देनी थी, मैं उनका धन्यवाद करता हूं और सबसे ज्यादा प्राइम मिनिस्टर का धन्यवाद करता हूं कि आपने सभी को सुना। आपने यहाँ दो घंटे से ज्यादा का समय दिया। आप बहुत भावुक हुए। यह सच है, हकीकत है, अगर मैं सच बताऊं तो जब मेरे माता-पिता की डेथ हुई, तो मेरी आँखों से आंसू तो निकले, लेकिन मैं चिल्लाकर रो नहीं पाया था। मैं जिंदगी में सिर्फ कुछ मौकों पर चिल्लाकर रोया था और जब इंसान रोता है तो चिल्लाकर रोने के लिए आपको आर्टिफिशियल होने की जरूरत नहीं है। वह पहला मौका था - संजय गाँधी जी की मौत, दूसरा - इंदिरा गाँधी जी की मौत और तीसरा -राजीव गाँधी जी की मौत। ये अलग-अलग जगहें थीं, क्योंकि तीनों मौतें अचानक हो गई थीं, अगर नैचुरल मौतें होतीं तो शायद वह चीख नहीं निकलती। चौथी चीख थी - जब ओडिशा में 1999 में सुपर सूनामी आया था। मैं तब अपने पिताजी को दिखाने के लिए हॉस्पिटल गया था। डॉक्टर ने कहा कि इनको गेलेपिन कैंसर है। मुझे तब तक गेलेपिन कैंसर का पता नहीं था, कैंसर मालूम था गले पर है। मैंने पूछा कि इसका क्या मतलब हुआ? उन्होंने कहा कि यह geometric ratio से बढ़ता है। दो का चार, चार का आठ, आठ का सोलह और सोलह का चौंसठ की गति से बढ़ता है। यह इस गति से बढ़ता है और इसकी अपर लिमिट 21 दिन है। आप 21 दिन तक कहीं मत जाइए। मैं दोपहर में यह रिपोर्ट लेकर आया और सुबह हमने कहीं जाने का प्रोग्राम बनाया कि इनको घुमाएंगे। शाम को मिसेज गाँधी का फोन आया कि वहाँ साइक्लोन है, जो दूसरे जनरल सेक्रेटरी हैं, वे जाना नहीं चाहते हैं और तुम ही जा सकते हो। अगर मैं उनसे कहता कि मेरे डॉक्टर ने यह कहा है, तो कहेंगी कि बहाना बना रहा है। मैं अपने पिताजी को छोड़कर, यह कहकर कि दो दिन में वापस आ जाऊंगा, चला गया। ओडिशा के लोगों के लिए एक नई बात करता हूं, क्योंकि "लुल्लू" इसका गवाह था, वह इस दुनिया में नहीं रहा, हमारी कांग्रेस का यंग लीडर था, आज भी बहुत हाउसहोल्ड नेम है। मैं जब ओडिशा एयरपोर्ट पर पहुंचा तो वहाँ 1 हज़ार लड़के थे। उन्होंने कहा कि सर, पैदल चलना है, क्योंकि शहर पानी में है और सारे पेड़ सड़कों पर हैं, इसलिए 10-12 किलोमीटर पैदल चलना होगा। हम पैदल चले। पहला सबसे बड़ा काम क्या था? कोई मिनिस्टर नहीं था, चीफ मिनिस्टर भाग गए थे, मिनिस्टर भाग गए थे, कोई एडमिनिस्ट्रेशन नहीं था। मैंने दुकानें तोड़कर पुलिस की मदद से लिस्ट बनाई, क्योंकि बाद में उनको पैसे देंगे। हमने जंगल काटने के लिए हथियार लिए। हमने तीन रातें और तीन दिन बिताए। अटल जी प्राइम मिनिस्टर थे, मैंने जाते ही अटल जी से फोन पर संपर्क किया कि यह स्थिति है और जब हम सड़क तैयार करेंगे, आप तब आइए, ताकि हम वहाँ समन्दर तक पहुंच जाएं। मैंने तीन रातें और तीन दिन तक जंगल काटने में और सड़क तैयार करने में यूथ कांग्रेस के तकरीबन 1 हज़ार लड़के लगाए और फिर पी.एम. को फोन किया। वे हेलिकॉप्टर से आए, उनसे राशन मंगाया, उसके बाद मैंने

सोनिया गाँधी जी को कहा। मैं वहाँ तब रोया, जब मैंने लाशें देखीं। वहाँ सैकड़ों लाशें तैर रही थीं, जब हम समन्दर के किनारे तक पहुंचे। मैं वहाँ चिल्लाकर रोया था। यह कोई चौथी दफा था। पाँचवीं दफा, जिसका उल्लेख माननीय प्रधान मंत्री जी ने किया और वे भावुक हुए, वह यह था कि जब मैं नवंबर, 2005 में चीफ मिनिस्टर बना और मई में, जब कश्मीर में दरबार खुला तो मेरा स्वागत मेरे गुजरात के भाइयों और बहनों की क़ुरबानी से हुआ। मैं अभी दो ही दिन पहले पहुँचा था। वहाँ स्वागत करने का militant का यही तरीका था कि गरीबों की हत्या करो, तो वही स्वागत होता है। उसका मतलब था कि हम हैं, इस गलतफहमी में न रहना। निशात बाग, जो कि राज भवन के साथ था, वहाँ बस के ऊपर, उस पर लिखा था गुजरात की बस, उसमें गुजरात के हमारे तकरीबन 40-50 भाई-बहनें, tourists थे, उस पर उन्होंने ग्रेनेड फेंका और मेरे ख्याल में दर्जन से ज्यादा लोग वहीं हताहत हो गए और कई ज़ख्मी हो गए। मैं फौरन तुरंत उस जगह पर पहुँचा, लेकिन तब तक पुलिस ने वह हटा दिया था। माननीय प्रधान मंत्री जी ने भी डिफेंस मिनिस्टर से बात की, मैंने प्रधान मंत्री जी से बात की। उनको लेने के लिए MI-8 जहाज आया, लेकिन जब मैं एयरपोर्ट पर पहुँचा, तो ज़ाहिर है कि सिक्योरिटी वाले कहते हैं कि सीएम आ रहे हैं, वे सब, हमारे ज़ख्मी भाई, छोटे-छोटे बच्चे एयरपोर्ट पर जाने के लिए तैयार थे, जब मैं एयरपोर्ट पर पहुँचा, तो इन बच्चों ने, जिनमें से किसी के पिता मर गए थे, किसी की माँ मर गई थी, जब वे रोते-रोते मेरी टाँगों से लिपट गए, तो ज़ोर से मेरी आवाज़ें निकल गईं कि ऐ ख़ुदा, यह तुमने क्या किया, मैं कैसे जवाब दूँ इन बच्चों को, मैं कैसे जवाब दूँ इन बहनों को, जो यहाँ तफरीह के लिए आए थे, सैर के लिए आए थे और आज मैं इनके माता-पिता की लाशें लेकर इनके हवाले कर रहा हूँ! यह भावुक होने की जरूरी बात थी। आज हम अल्लाह से, भगवान से यही दुआ करते हैं कि इस देश से militancy खत्म हो जाए, इस देश से आतंकवाद खत्म हो जाए। हमारी सिक्योरिटी फोर्सेज़ के, आर्मी के, पैरा-मिलिटरी फोर्सेज़ के, पुलिस के हज़ारों जवान मारे गए हैं, कई civilians cross firing में मारे गए हैं। हमारी हज़ारों बेटियाँ और माँऐ आज बेवा हैं। शायद उनमें से कइयों के पति militant होंगे, कई cross firing में मारे गए होंगे, लेकिन उसमें उनके बच्चों का क्या कसूर, उनकी बेवाओं का क्या कसूर! वे भी हज़ारों की तादाद में हैं। जब यह militancy खत्म हो जाएगी, तो उनके बच्चों, उन बेवाओं को भी रोजगार मिलेगा और वे भी इंसानों की ज़िन्दगी बसर करेंगे। इसके लिए हम सबको, सरकार को, विपक्ष को प्रयास करना है और कोई हल निकालना है, ताकि हमारे कश्मीर के हालात ठीक हो जाएँ।

इससे पहले कि मैं कुछ अशआर बोलूँ, पहले मैंने अपने फौजियों के नाम कहा था, लेकिन मैं यह शेर मेरे कश्मीरी पंडित भाइयों और बहनों के लिए बोलना चाहता हूँ। जब मैं कश्मीर में पढ़ता था, जब मैं यूनिवर्सिटी में जीत कर आता था, तो सबसे ज्यादा कश्मीरी पंडित लड़के-लड़कियाँ मुझे वोट देते थे। बहुत सारे लोगों को मालूम नहीं कि कश्मीर में लड़कियाँ हिन्दुस्तान की अन्य state के मुकाबले सबसे ज्यादा पढ़ती थीं, जम्मू में नहीं, कश्मीर में। जिस वक्त मैं M.Sc. कर रहा था, तो Science में तकरीबन 50 परसेंट लड़कियाँ होती थीं और Arts में 90 परसेंट लड़कियाँ होती थीं। इस तरह से overall ज्यादा लड़कियाँ post graduation में पढ़ती थीं। जब मैं यूनिवर्सिटी का इलेक्शन लड़ता था, तो हमारे कश्मीरी पंडित लड़के हों या लड़कियाँ हों, मुझे उनके सबसे ज्यादा वोट, 100 परसेंट मिलते थे, मैं 99 भी नहीं कहूँगा। वे दोस्त आज बिखरे हुए हैं। मुझे बहुत अफसोस होता है, जब मैं अपने classmates से मिलता हूँ। यह शेर मेरे उन कश्मीरी

पंडित भाइयों के नाम है, जो घर से बेघर हो गए, उन कश्मीरी बेवाओं के नाम है, उन बच्चों के नाम है, जो वहां से बिछड़ गए। साथ ही, आज हमारी यहां पर मुद्दत खत्म हुई है, उसके लिए भी मैं यह शेर कह सकता हूं-

"गुज़र गया जो छोटा सा इक फ़साना था,
फूल थे, चमन था, आशियाना था,
न पूछ उजड़े नशेमन की दास्तां,"

वह घोंसला उजड़ गया...

"न पूछ उजड़े नशेमन की दास्तां,
न पूछ चार तिनके थे मगर नाम आशियाना तो था ।।"

आज हम इस आशियाने को छोड़ रहे हैं। आप दोनों यहां बैठे हैं, आप उस आशियाने को फिर बनाएंगे, जो इस वक्त उजड़ा हुआ है। इसके लिए हम सबको प्रयास करना है। जैसा मैंने कहा, हम अब बहुत काम कर चुके हैं, बहुत सेवा कर चुके हैं और सबका आशीर्वाद हमें मिला है। आज मैं यही कहूंगा -

"दिल ना- उम्मीद तो नहीं नाक़ाम ही तो है,
लम्बी है ग़म की शाम मगर शाम ही तो है ।।"

शाम कितनी भी लम्बी हो, सवेरा तो आएगा ही। विंटर में शाम ज़रा वैसे ही लम्बी होती है। इसलिए,

"लम्बी है ग़म की शाम मगर शाम ही तो है ।।"
सवेरा तो फिर आ ही जाएगा, चाहे हम यहां नहीं होंगे।

आख़िर में मैं कहूंगा -

"बदलेगा न मेरे बाद भी मौज़ू- ए- गुफ़्तगू,
मैं जा चुका होऊँगा फिर भी तेरी महफ़िलों में रहूंगा ।।"

माननीय चेयरमैन साहब, मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं कि आपके साथ काम करने का मुझे अवसर मिला। जब आप पार्टी के अध्यक्ष थे, तब भी हमारी मुलाक़ात होती थी, जब आप मंत्री बने, तब भी हमारी बात होती थी और वाइस प्रेज़िडेंट बनने से पहले जब आप पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर थे और मैं एलओपी था, तब भी हमारा सम्पर्क रहा है। फिर भी चेयरमैन के तौर पर मुझे आपसे जिस तरह का आशीर्वाद, जिस तरह का प्रेम, जिस तरह का प्यार, जिस तरह की गाइडेंस मिली, उसके लिए मैं हमेशा आपका ऋणी रहूंगा, धन्यवादी रहूंगा।

माननीय प्रधान मंत्री जी, कई दफ़ा आपके साथ टोका-टोकी हुई, लेकिन आपने कभी भी बुरा नहीं माना। एलओपी के वक़्त में आपकी बड़ी लम्बी-लम्बी स्पीचें हुईं, मेरी भी हुईं। खास तौर पर राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के ऊपर जब भी तक़रीर होती थी, हम भी एलओपी की ज़िम्मेदारी निभाते थे, लेकिन कभी भी उन बातों को आपने व्यक्तिगत तौर पर अपने खिलाफ नहीं लिया। आपने हमेशा personal context को और पार्टी की जिम्मेदारी को दूर-दूर रखा। कभी ईद हो,

दिवाली हो या बर्थडे हो, बराबर आपने उसका ध्यान रखा और कभी भी सबसे पहले फोन करने में कमी नहीं की। या तो मेरी पार्टी प्रेज़िडेंट, श्रीमती गांधी का सबसे पहले फोन आता था या आपका आता था, इन दो लोगों का तो अनिवार्य रूप से फोन आता ही था। आपने हमेशा यही कहा कि अगर कभी भी अपनी स्टेट के बारे में कुछ काम हो या दूसरा कुछ काम हो, तो आप मुझे बताना।

मुझे याद है, जब मैं राज्य सभा का इलेक्शन लड़ने गया, तो आपने मुझसे कहा कि भाई, आपको भी इलेक्शन लड़ने के लिए कोई ज़रूरत है? उस समय मैंने कहा, यह तो लड़ाई है, यहां आपका कैंडिडेट भी है और मैं भी एक कैंडिडेट हूं, इसलिए इसमें आप कुछ नहीं कर सकते। इस तरह आपस में जो एक पर्सनल टच होता है, उससे आदमी भावुक हो जाता है, सेंटिमेंटल हो जाता है, इमोशनल हो जाता है। विपक्ष के साथ मेरा सम्पर्क आज से नहीं है, पहली दफ़ा जब मैं एमओएस बना था, तब से लेकर आज तक मैं सबके सम्पर्क में रहा हूं। हम मिलकर ही इस देश को चला सकते हैं, लड़ाई करके या गालियां देकर नहीं चला सकते। हम अपनी बात अपने भाषणों के ज़रिये कर सकते हैं। मैं आपका बहुत धन्यवाद करता हूं। माननीय डिप्टी चेयरमैन साहब, यहां मेरे बैंचमेट रहे, वह हमेशा मुझे याद रहेगा। वे बहुत सिम्पल आदमी हैं, स्ट्रेट फॉरवर्ड हैं। कभी-कभी हम स्ट्रेट फॉरवर्ड से नाराज़ होते हैं, स्ट्रेट फॉरवर्ड से लोग हमेशा नाराज़ होते हैं। शरद पवार जी से लेकर, यादव जी से लेकर हमारे लीडरों का मैं बहुत धन्यवाद करता हूं। लेफ्ट, राइट एंड सेन्टर के सब मैम्बरों का यदि मैं नाम लूंगा तो बहुत सारे हमारे साथी नाराज़ होंगे, तो चेयरमैन साहब से लेकर, प्रधान मंत्री जी से लेकर मैं सेक्रेटरी जनरल साहब और सेक्रेटेरिएट का कैसे धन्यवाद कर सकता हूं, करना मुश्किल है, क्योंकि हमेशा और हर वक्त इनका सहयोग मिला, जब भी हमने पार्लियामेन्ट की कुछ इन्फॉर्मेशन चाही या कोऑर्डिनेशन के बारे में आप तक पहुंचने की बात की, तो सेक्रेटरी जनरल साहब ने और सेक्रेटेरिएट ने हमेशा हमारी मदद की है।

आख़िर इस शेर के साथ मैं आपसे विदाई लेता हूं। इंशाअल्लाह हम मिलते रहेंगे, चाहे यहां नहीं मिलें, लेकिन हम एक-दूसरे के पास आ-जा सकते हैं।

नहीं आएगी याद तो बरसों नहीं आएगी,
मगर जब याद आओगे तो बहुत याद आओगे।

†**قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی آزاد)** : مانیئے چئیرمین سر، آپ نے، مانیئے پردھان منتری جی نے، مانیئے ڈپٹی چئیرمین صاحب نے اور میرے اس طرف کے یا اس طرت کے، ستّہ دھاری پارٹی کے یا وِپکش کے جتنے بھی ساتھی یہاں ہیں اور خاص طور پر آپ نے اور مانیئئے پردھان منتری جی نے جس طرح سے بھاؤک ہوکر میرے بارے میں کچھ شبد بتائے ہیں، میں بڑی سوچ میں پڑگیا کہ کیا کہونگا؟ ان 41 سالوں میں جو میرا legislative career رہا، 28 سال اس ہاؤس میں، 10 سال لوک سبھا میں، تین سال جموں کشمیر اسمبلی میں، تو یہ کہوں گا کہ مہاراشٹر سے جیت کر آیا۔ میں کبھی ادھر سے نکلا، ادھر ڈوبا، ادھر ڈوبا، ادھر نکلا، یہ میرا جیون رہا اور سنگھرش کا زمانہ رہا۔ میں آج بہت ساری چیزوں کا چھوٹا کرنے کے لیے کچھ شعروں میں ہی اپنی بات ختم کردینا چاہتا ہوں۔ شاعر جو ہوتے ہیں، ان کے شعروں میں ایک بڑی طاقت ہوتی ہے کہ ہم لوگ اگر دس گھنٹے کا بھاشن دیں، تو وہ دو شعر میں ہی اس کو ختم کردیتے ہیں۔ میں اس کا فائدہ اٹھانا چاہتا ہوں۔ اگر میں 41 سال کے تجربے کے بارے میں کہنا چاہونگا، تو بہت وقت لگے گا۔ کئی ہفتے اور مہینے لگیں گے۔ میں اپنی بات وہاں سے شروع کرونگا، جس بات سے مین نے اسٹوڈینٹ لائف میں اپنا پالیٹیکل کرئیر شروع کیا۔ مین جموں سے ہوں، لیکن میرا

† Transliteration in Urdu script.

ڈسٹرکٹ شمشیرسنگھ جی جانتے ہیں، مسلم میجارٹی ڈسٹرکٹ، اس کا اثر کشمیر کا زیادہ ہوتا ہے، جموں کا اثر کم پڑتا ہے۔ خاص طور سے مسلم میں اور اس کے بعد کالج اور یونیورسٹی تو میں کشمیر میں ہی پڑھا۔ میں گاندھی جی کو پڑھتا تھا، نہرو کو پڑھتا تھا، مولانا آزاد کو پڑھتا تھا، ان تینوں کے بارے میں پڑھتا تھا۔ میں نے اسکول سے لیکر جو دیش بھکتی سیکھی ہے، وہ دیش بھکتی آج ان نوجوانوں کی نظر میں، جو سیاچن میں ہیں، جموں وکشمیر میں کئی دہائیوں سے ہیں، ٹھنڈ میں ہیں، برف میں ہیں، ان کے نام سے میں شروع کرتا ہوں۔

خون کی مانگ ہے اس دیش کی رکشا کے لیے،
میرے نزدیک یہ قربانی بہت چھوٹی ہے، دے دو۔

میرے من میں یہ بات بچپن سےاور اسکول سے رہی۔ جب میں کشمیر کے سب سے بڑے کالج ایس۔پی۔ کالج، شری پرتاپ کالج میں پڑھتا تھا، مجھے یاد ہے کہ ہمارے کالج یمں 14 اگست بھی منایا جاتا تھا اور 15 اگست بھی منایا جاتا تھا۔ 14 اگست تو آپ جانتے ہیں کہ کس کے لئے منایا جاتا ہے اور مجیورٹی ان کی تھی، جو 14 اگست مناتے تھے۔ بہت کم مائنارٹی تھی، درجنوں میں تھی، جس سے میں، میں بھی تھا اور میرے دوست تھے، جو 15 اگست میں اسٹاف اور پرنسپل کے ساتھہ رہتے تھے۔ اس کے بعد ہم ایک ہفتہ کالج نہیں جاتے تھے، کیوں کہ پٹائی ہوتی تھی۔ اس وقت سے نکل کر ہم اس سوچ میں آئے ہیں، جس سوچ میں آج ہم سب ہیں اور مجھے اس بات کی خوشی ہے کہ اس سوچ کو بہت سارے لوگوں نے – اور میں دوسری پارٹیز کو بھی بدھائی دیتا ہوں، چاہے وہ نیشنل کانفرنس ہو، پی۔ڈی۔پی۔ ہو، بی۔جے۔پی۔ تو شروع سے ہی قومی دھارا کی پولیٹکس میں تھی، وہ بھی آہستہ آہستہ بڑے پیمانے پر آئے اور کشمیر آگے بڑھا۔ میری ہمیشہ یہ سوچ رہی کہ ہم بڑے خوش قسمت تھے – میں تو آزادی کے بعد پیدا ہوا، لیکن آج میں گوگل کے ذریعے پڑھتا ہوں، دیکھتا ہوں، سنتا ہوں، اور یو۔ٹیوب کے ذریعے بھی پڑھتا ہوں – میں ان خوش قسمت لوگوں میں ہوں، جو پاکستان کبھی نہیں گئے۔ لیکن جب میں پڑھتا ہوں کہ پاکستان کے اندر کس طرح کے حالات ہیں، تو مجھے گورو محسوس ہوتا ہے، مجھے فخر محسوس ہوتا ہے کہ ہم ہندوستانی مسلمان ہیں، بلکہ میں آج کہوں گا کہ دنیا میں کسی مسلمان کو اگر گورو ہونا چاہئے، تو وہ ہندوستان کے مسلمان کو گورو ہونا چاہئے۔ ہم نے پچھلے 35-30 سالوں سے افغانستان سے لے، عراق سے لے کر اور کچھہ سالوں سے دیکھہ کہ کس طرح سے مسلم دیش ایک دوسرے کے اندر اور ایک دوسرے سے لڑائی کرتے ہوئے ختم ہو رہے ہیں۔ وہاں ہندو تو نہیں ہیں، وہاں کوئی کرشچئن تو نہیں ہیں، وہاں کوئی دوسرا تو نہیں ہے، جو لڑائی کر رہا ہے، وہ آپس میں لڑائی کر رہے ہیں۔ یہ سننے میں آیا ہے کہ ہمدرد تو پاکستان کے لوگ بہت تھے، میں کبھی وہاں نہیں گیا، لیکن جو سماج میں برائیاں ہیں – ہمیں دوسرے ملک کے بارے میں نہیں کہنا چاہئے، لیکن ہم گورو سے یہ کہہ سکتے ہیں کہ ہمارے مسلمانوں میں وہ برائیاں خدا نہ کرے کہ کبھی بھی آئیں۔ آج ہم گورو سے یہ کہہ سکتے ہیں، لیکن یہاں میجورٹی کمیونٹی کو بھی دو قدم آگے بڑھنے کی ضرورت ہے، تبھی مائنارٹی کمیونٹی دس قدم آگے بڑھے گی۔ میری ہمیشہ سے یہ سوچ رہے گی۔ مجھے پتہ نہیں کہ شمشیر سنگھہ نے چیف منسٹر بننے کے بعد کی میری پہلی پبلک میٹنگ کے بارے میں کبھی سنا ہے یا نہیں۔ میں جب سی۔ایم۔ بنا تو آپ کو یہ جان کر تعجّب ہوگا کہ سی۔ ایم۔ کے طور پر میں نے پہلی میٹنگ کہاں لی ہوگی۔ وہ میں نے سوپور میں لی تھی، جہاں کئی دشکوں سے پبلک میٹنگ کوئی نہیں کر سکتا اور آج بھی نہیں کر سکتا۔ وہ میٹنگ شہر میں تو نہیں کی، لیکن اسی کانسٹی ٹیونسی میں کی، جہاں کے گلانی صاحب ہیں، جو گلانی صاحب وہاں سے تین دفعہ ایم۔ایل۔اے۔ چن کر آئے تھے۔ اس پبلک میٹنگ میں، میں نے کیا کہا تھا کہ میری سرکار جموں و کشمیر کے لوگوں کی سرکار ہوگی اور اگر میری سرکار کو کوئی منتری دھرم کی بنیاد پر، مذہب کی بنیاد پر اور پارٹی کی بنیاد پر انصاف کرے گا، تو مجھے شرم آئے گی کہ ایسے منتری یا ایسے افسر میرے ساتھہ کام رہے ہیں۔ میں اسی سوچ کا ہوں اور میں جہاں بھی گیا وہاں مجھے لوگوں کا بہت پیار ملا ہے۔ آنند شرما جی نے جیسے بتایا اور شرد جی نے جیسے بتایا کہ ان کو تو بہت عرصے سے جانتا ہوں۔

مجھے سوبھاگیہ ملا اور اس کے لئے میں بدھائی دینا چاہتا ہوں اور دھنیواد کرتا ہوں آج وہ زندہ نہیں ہیں، اندرا گاندھی جی کا، سنجے گاندھی جی کا، جن کی وجہ سے میں یہاں پہنچا ہوں۔ لیکن تقریبا پانچ ادھیکشوں کے ساتھہ کام کرنے کا موقع ملا اور چار یا پانچ پرائم منسٹرس کے منتری منڈل میں کام کرنے کا موقع ملا، لیکن اس کے ساتھہ ہی مجھے ہندوستان کے سبھی 36-35 اسٹیٹس، یو۔ٹیز۔ میں انچارج کے روپ میں کام کرنے کا موقع بھی ملا۔ آج میرے سبھی دوست ہیں، بھائی بہن ہیں اور میں یہ کہہ سکتا ہوں کہ انڈمان سے لے لکشدیپ تک اور کشمیر سے لے کر کنیا کماری تک، سگم سے لے کر گجرات تک وہ پھیلے ہوئے ہیں۔ میں نے یہی چیز کمائی ہے۔ میں اس پارلیمنٹ سے بہت کچھہ سیکھا ہے۔ مجھے پارٹی کے جنرل سیکریٹری کے روپ میں اور منتری کے روپ میں کام کرنے کا موقع ملا۔ مجھے یہ موقع اندرا گاندھی جی کے وقت میں ملا، راجیو جی کے وقت میں ملا، سونیا گاندھی جی کے وقت میں ملا اور راہل گاندھی جی کے وقت میں ملا۔ شاید بہت کم لوگوں کو یہ موقع حاصل ہوا ہوگا کہ جو اپنی عمر سے دوگنی عمر کے لوگ تھے، بڑے لیڈر تھے، ان کے ساتھہ پارٹی کی طرف سے مجھے میٹنگ کرنے کا موقع ملا۔ مجھے کئی پارٹیوں کے ساتھہ نیگوسیئشن کرنے کا موقع ملا، ان میں جیوتی بسو جی

تھے، کروناندھی جی تھے۔ میں نے جے للیتا جی کے ساتھ الائینس کیا، کروناکرن جی کے ساتھ کیا، چندر شیکھر جی کے ساتھ کیا، دیوی لال جی کے ساتھ کیا، ملائم سنگھ جی کے ساتھ کیا اور پرکاش سنگھ بادل جی کے ساتھ الائنس نہیں کیا، لیکن جب میں گرہ راجیہ منتری تھا تک کئی میٹنگس ان کے ساتھ ہوئیں، اس وقت میں پنجاب اکارڈ اور آسام اکارد کا امپلی مینٹیشن دیکھتا تھا۔ اس کے علاوہ آئی۔کے۔گجرال صاحب سے، شیبو سورین جی سے، شہاب تھنگل جی سے، موپنار جی سے، فاروق صاحب سے، مفتی صاحب سے، ان سبھی لوگوں کے ساتھ کئی دفعہ مجھے الائنس کرنے کا موقع ملا۔ یہی وجہ ہے کہ یہاں بھی میں نے اسی طرح سے کام چلایا۔ میں تین پرائم منسٹرس کے ساتھ میں پارلیمنٹ افیئرس منسٹر رہا ہوں۔ میں اس بات کو بھول نہیں سکتا کہ اندرا جی، فوتیدار جی کو اور مجھے بتاتی تھیں۔ فوتیدار جی پولیٹکل سکریٹری تھے اور میں یوتھ کانگریس کا پریذیڈینٹ تھا۔ انہوں نے کہا کہ ذرا اٹل جی سے بھی سمپرک میں رہا کرو۔ انہوں نے بی۔جے۔پی۔ نہیں کہا – اٹل جی سے سمپرک میں رہا کرو، وہ اس سوچ کی تھیں۔ بعد میں راجیو جی جب پرائم منسٹر بنے، تو انہوں نے کہا کہ وپکش کے جو لوگ ہیں، ان کے پاس تو دو ایم۔پیز ہیں، ہمارا اتنا بہومت ہے – ان کو بھی تو اپنی کانسٹی ٹیونسی کا کام کرنا ہوتا ہوگا، ان سے بھی ذرا پوچھا کرو۔ جب میں راجیو گاندھی جی کے وقت میں پارلیمنٹری افیئرس منسٹر بنا، تو پھر ایک دفعہ انہوں نے یاد دلایا کہ آپ بہت سارے کام اپنی پارٹی کے کرتے ہو، کیا وپکش کے بھی کچھ کام کرتے ہو، تو میں نے کہا کہ ہاں، میں بالکل ان سے پوچھتا ہوں اور وہ جو جو کام بتاتے ہیں، ہم ان کو کرتے ہیں۔ ہر بات آپ کو بتانے کی ضرورت نہیں ہے، ہم اپنے لیول پر کرتے ہیں۔ بعد میں، میں نے یہی چیز مانّئے اٹل بہاری واجپئی جی سے سیکھی۔ میں 1991 سے 1996 تک پانچ سال پارلیمنٹری افیئرس منسٹر رہا، اس کے علاوہ اور بھی پورٹ فولیو میرے پاس تھے۔ اس وقت اٹل جی وپکش کے نیتا رہے۔ ہمارے پاس بہومت نہیں تھا اور الائنس بھی نہیں تھا، مائنارٹی گوورنمینٹ تھی اور اس مائنارٹی گوورنمینٹ میں اٹل بہاری واجپئی جی وپکش کے نیتا ہوں، تو آپ سمجھ سکتے ہیں کہ ہاؤس کو چلانا کتنا مشکل ہو سکتا ہے، لیکن میں کہوں گا کہ سب سے آسان ہاؤس چلانا ان پانچ سال میں مجھے اٹل جی کی لیڈر شپ میں ملا۔ میں نے ان سے سیکھا کہ کس طرح حل نکالا جا سکتا ہے – وپکش کی بھی بات رہے اور سرکار کی بھی بات رہے۔ میں نے این ایل۔او۔پی۔ کے زمانے میں یہ کوشش کی کہ ہم یہاں آئے ہیں، لوگوں نے ہمیں قانون بنانے کے لئے چنا ہے، لوگوں نے ہمیں کئی مسئلوں کا سمادھان نکالنے کے لئے، حل نکالنے کے لئے چنا ہے، ان کی مشکلات کو دور کرنے کے لئے چنا ہے۔ ان کے لئے روزگار پیدا کرنا، ایمپلائمینٹ پیدا کرنا، ڈیولپمینٹ کرنا، وکاس کرنا، سڑکیں، نہریں، اسکول کالج، اسپتال بنانا، بجلی کی پیداوار کرنا، یہ سب کام کرتے ہیں۔

اگر ہم ہر وقت آپس میں ہی لڑتے رہے، جھگڑتے رہے، تو وہ قانون پاس نہیں ہوں گے اور ہم پر سے لوگوں کا وشواس اٹھ جائے گا، اس لئے میں اپنے ساتھیوں کو بھی سمجھاتا تھا کہ اس کو مکس کرو۔ ایک۔آدھ دن ورودھ دکھاؤ، ایک۔آدھ دن جھگڑا کرو اور باقی دن ڈسکشن کرو۔ میں نے یہ ہمیشہ کوشش کی اور میں اس کے لئے اپنے اس طرف کے ساتھیوں اور اس طرف کے سبھی لیڈروں کا دھنیواد کرتا ہوں، جنہوں نے اس پریاس میں اپنی پورا سہیوگ دیا۔ گرہ منتری جی کو اسٹیٹمینٹ دینی تھی، میں ان کا دھنیواد کرتا ہوں اور سب سے زیادہ پرائم منسٹر کا دھنیواد کرتا ہوں کہ آپ نے سبھی کو سنا۔ آپ نے یہاں دو گھنٹے سے زیادہ کا وقت دیا۔ آپ بہت بھاوک ہوئے۔ یہ سچ ہے، حقیقت ہے، اگر میں سچ بتاؤں تو جب میرے ماتا۔پتا کی ڈیتھ ہوئی، تو میری آنکھوں سے آنسو تو نکلے، لیکن من چلّا کر رو نہیں پایا تھا۔ میں زندگی میں صرف کچھ موقعوں پر چلّا کر رویا تھا اور جب انسان روتا ہے تو چلّا کر رونے کے لئے آرٹیفیشئل ہونے کی ضرورت نہیں ہے۔ وہ پہلا موقع تھا – سنجے گاندھی جی کی موت، دوسرا – اندرا جی کی موت اور تیسرا۔ راجیو جی کی موت۔ یہ الگ الگ جگہیں تھیں، کیوں کہ تینوں موتیں اچانک ہو گئی تھیں، اگر نیچرل موتیں ہوتیں تو شاید وہ چیخ نہیں نکلتی۔ چوتھی چیخ تھی – جب اوڈیشہ میں 1999 میں سپر سنامی آیا تھا۔ میں تب اپنے پتا جی کو دکھانے کے لئے ہاسپٹل گیا تھا۔ ڈاکٹر نے کہا کہ ان کو گیلیپن کینسر ہے۔ مجھے تب تک گیلیپن کینسر کا پتہ نہیں تھا، کینسر معلوم تھا گلے پر ہے۔ میں نے پوچھا کہ اس کا کیا مطلب ہوا؟ انہوں نے کہا کہ یہ جیوگرافیکل ریشیو سے بڑھتا ہے۔ دو کا چار، چار کا آٹھ، آٹھ کا سولہ اور سولہ کا چوسٹھ کی رفتار سے بڑھتا ہے۔ یہ اس رفتار سے بڑھتا ہے اور اسکی اپر لمٹ 21 دن ہے۔ آپ 21 دن تک کہیں مت جائیے۔ میں دوپہر میں یہ رپورٹ لے کر آیا اور صبح ہم نے کہیں جانے کا پروگرام بنایا کہ ان کو گھمائیں گے۔ شام کو مسز گاندھی کا فون آیا کہ وہاں سائیکلون ہے، جو دوسرے جنرل سکریٹری ہیں، وہ جانا نہیں چاہتے ہیں اور تم ہی جا سکتے ہو۔ اگر میں ان سے کہتا کہ میرے ڈاکٹر نے یہ کہا ہے، تو کہیں گی کہ بہانہ بنا رہا ہے۔ میں اپنے پتا جی کو چھوڑ کر، یہ کہہ کر کہ دو دن میں واپس آ جاؤنگا، چلا گیا۔ اوڈیشہ کے لوگوں کے لئے ایک نئی بات کرتا ہوں، کیوں "للّو" اس کا گواہ تھا، وہ اس دنیا میں نہیں رہا، ہماری کانگریس کا ینگ لیڈر تھا، آج بھی بہت ہاؤس ہولڈ نیم ہے۔ میں جب اوڈیشہ ایئرپورٹ پر پہنچا تو وہاں ایک ہزار لڑکے تھے۔ انہوں نے کہا کہ سر، پیدل چلنا ہے، کیوں شہر پانی میں ہے اور سارے پیڑ سڑکوں پر ہیں، اس لئے دس، بارہ کلو میٹر پیدل چلنا ہوگا۔ ہم پیدل چلے۔ پہلا سب سے بڑا کام کیا تھا؟ کوئی منسٹر نہیں تھا، چیف منسٹر بھاگ گئے تھے، منسٹر بھاگ گئے تھے، کوئی ایڈمنسٹریشن نہیں تھا۔ میں نے دکانیں توڑ کر پولیس کی مدد سے لسٹ بنائی، کیوں بعد میں ان کو پیسے دیں گے۔ ہم نے جنگل کاٹنے کے لئے ہتھیار لئے۔ ہم نے تین راتیں اور تین دن بتائے۔ اٹل جی پرائم منسٹر تھے،

میں نے جاتے ہی اٹل جی سے فون پر سمپرک کیا کہ یہ حالت ہے اور جب ہم سڑک تیار کریں گے، آپ تب آئیے، تاکہ ہم وہاں سمندر تک پہنچ جائیں۔ میں نے تین راتیں اور تین دن جنگل کاٹنے میں اور سڑک تیارکرنے میں یوتھہ کانگریس کے تقریبا ایک ہزار لڑکے لگائے اور پھر پی۔ایم۔ کو فون کیا۔ وہ ہیلی کاپٹر سے آئے، ان سے راشن منگایا، اس کے بعد میں نے سونیا گاندھی جی کو کہا۔ میں وہاں تب رویا، جب میں نے لاشیں دیکھیں۔ وہاں سیکڑوں لاشیں تیر رہی تھیں، جب ہم سمندر کے کنارے تک پہنچے۔ میں وہاں چلّا کر رویا تھا۔ یہ کوئی چوتھی دفعہ تھا۔ پانچویں دفعہ، جس کا الّیکھہ مانّئے پردھان منتری جی نے کیا اور وہ بھاوک ہوئے،وہ یہ تھا کہ جب میں دسمبر، 2005 میں چیف منسٹر بنا اور مئی میں، جب کشمیر میں دربار کھلا تو میرا سواگت میرے گجرات کے بھائیوں اور بہنوں کی قربانی سے ہوا۔

میں ابھی دو ہی دن پہلے پہنچا تھا۔ وہاں سواگت کرنے کا ملی ٹینٹ کا یہی طریقہ تھا کہ غریبوں کی ہتیا کرو، تو وہی سواگت ہوتا ہے۔ اس کا مطلب تھا کہ ہم ہیں، اس غلط فہمی میں نہ رہنا۔ نشاط باغ، جو کہ راج بھون کے ساتھ تھا، وہاں بس کے اوپر، اس پر لکھا تھا گجرات کی بس، اس میں گجرات کے ہمارے تقریباً 50-40 بھائی بہنیں tourists تھے، اس پر انہوں نے گرینیڈ پھینکا اور میرے خیال مین درجن سے زیادہ لوگ وہیں ہتاہت ہوگئے اور کئی زخمی ہوگئے۔ میں فورن اس جگہ پر پہنچا، لیکن تب تک پولیس نے وہ ہٹا دیا تھا۔ مانیئے پردھان منتری جی نے بھی ڈفینس منسٹر سے بات کی، میں نے پردھان منتری جی سے بات کی۔ ان کو لینے کے لیے جہاز MI-8 آیا، لیکن جب میں ائرپورٹ پر پہنچا، تو ظاہر ہے کہ سیکورٹی والے کہتے ہیں کہ سی ایم آرہے ہیں، وہ سب، ہمارے زخمی بھائی، چھوٹے چھوٹے بچے ائرپورٹ پر جانے کے ہیے تیار تھے، جب مین ائرپورٹ پر پہنچا، تو ان بچوں نے، جن میں سے کسی کے پِتا مر گئے تھے، کسی کی ماں مر گئی تھی، جب وہ روتے روتے میری ٹانگوں سے لپٹ گئے، تو زور سے میری آوازیں نکل گئیں کہ اے خدا، یہ تم نے کیا کیا، میں کیسے جواب دوں ان بچوں کو، مین کیسے جواب دوں ان بہنوں کو، جو یہاں تفریح کے لیے آئے تھے، سیر کے لیے آئے تھے اور آج میں ان کے ماتا پتا کی لاشیں لیکر ان کے حوالے کررہا ہوں۔ یہ بھاؤک ہونے کی ضروری بات تھی۔ آج ہم اللہ سے، بھگوان سے یہی دعا کرتے ہیں کہ اس دیش سے ملی ٹینسی ختم ہوجائے، اس دیش سے آتنک واد ختم ہوجائے۔ ہماری سیکورٹی فورسیز کے، آرمی کے، پیرا ملٹری فورسیز کے، پولیس کے ہزاروں جوان مارے گئے ہیں، کئی civilians cross firing میں مارے گئے ہیں۔ ہماری ہزاروں بیٹیاں اور مائیں آج بیوا ہیں۔ شاید ان میں سے کئیوں کے پتی ملی ٹینٹ ہونگے، کئی کراس فائرنگ میں مارے گئے ہونگے، لیکن اس میں ان کے بچوں کا کیا قصور، ان کی بیواؤں کا کیا قصور! وہ ہزاروں کی تعداد میں ہیں۔ جب یہ ملی ٹینسی ختم ہوجائے گی، تو ان کے بچوں ان بیوان کو بھی روزگار ملے گا اور وہ بھی انسانوں کی طرح زندگی بسر کریں گے۔ اس کے لیے ہم سب کو، سرکار کو، وِپکش کو کوشش کرنی ہے اور کوئی حل نکالنا ہے، تاکہ ہمارے کشمیر کے حالات ٹھیک ہوجائیں۔

اس سے پہلے کہ میں کچھ اشعار بولوں، پہلے میں نے اپنے فوجیوں کے نام کہا تھا، لیکن مین یہ شعر میرے کشمیری پنڈت بھائیوں اور بہنوں کے لیے بولنا چاہتا ہوں۔ جب میں کشمیر میں پڑھتا تھا، جب مین یونیورسٹ میں جیت کر آتا تھا، تو سب سے زیادہ کشمیری پنڈت لڑکے لڑکیاں مجھے ووٹ دیتے تھے۔ بہت سارے لوگوں کو معلوم نہیں کہ کشمیر میں لڑکیاں ہندستان کے مقابلے سب سے زیادہ پڑھتی تھیں، جموں میں نہیں، کشمیر میں۔ جس وقت میں .M.Sc کررہا تھا تو سائنس میں تقریباً پچاس فیصد لڑکیا ہوتی تھیں اور آرٹس میں نوّے فیصد لڑکیاں ہوتی تھیں۔ اس طرح سے اوورآل زیادہ لڑکیاں پوسٹ گریجویشن پڑھتی تھیں۔ جب میں یونیورسٹی کا الیکشن لڑتا تھا، تو ہمارے کشمیری پنڈت لڑکے ہوں یا لڑکیاں ہو، مجھے ان کے سب سے زیادہ ووٹ، سوفیصد ملتے تھے، میں ننیاوے بھی نہیں کہوں گا۔ وہ دوست آج بکھرے ہوئے ہین۔ مجھے بہت افسوس ہوتا ہے، جب مین اپنے کلاس میٹس سے ملتا ہوں۔

یہ شعر میرے ان کشمیری پنڈت بھائیوں کے نام ہے، جو گھر سے بے گھر ہوگئے، ان کشمیری بیواؤں کےنام ہے، ان بچوں کے نام ہے، جو وہاں سے بچھڑ گئے۔ ساتھ ہی، آج ہماری یہاں پر مدت ختم ہوئی ہے، اس کے لیے بھی میں یہ شعر کہہ سکتا ہوں ؂

گزر گیا جو چھوٹا سا ایک فسانہ تھا
پھول تھے، چمن تھا، آشیانہ تھا
نہ پوچھ اجڑے نشیمن کی داستاں

وہ گھونسلہ اجڑ گیا۔

نہ پوچھ اجڑے نشیمن کی داستاں
نہ پوچھ تھے چار دن کے مگر نام آشیانہ تو تھا

آج ہم اس آشیانہ کو چھوڑ رہے ہیں۔ آپ دونوں یہاں بیٹھے ہیں، آپ اس آشیانے کو پھر بنائیں گے، جو اس وقت اجڑا ہوا ہے۔ اس کے لیے ہم سب کو پریاس کرنا ہے۔ جیسا میں نے کہا، ہم اب بہت کام کرچکے ہیں، بہت سیوا کر چکے ہیں اور سب کا آشیرواد ہمیں ملا ہے۔ آج میں یہی کہوں گا۔

دل نہ امید تو نہیں نا کام ہی تو ہے
لمبی ہے غم کی شام مگر شام ہی تو ہے

شام کتنی بھی لمبی ہہو، سویرا تو آئے گا ہی۔ وِنٹر میں شام ذرا ویسے ہی لمبی ہوتی ہے۔ اسلیے ؎
لمبی ہے غم کی شام مگر شام ہی تو ہے
سویرا تو پھر آ ہی جائے گا، چاہے ہم یہاں نہیں ہونگے
آخر میں میں کہوں گا ؎
بدلے گا نہ میرے بعد بھی موضوع گفتگو
میں جاچکا ہوؤونگا پھر بھی تیری محفلوں میں رہوں گا

مانیئے چیئرمین صاحب میں آپ کو بہت بہت دھنیوار کرتا ہوں کہ آپ کے ساتھ کام کرنے کا مجھے موقع ملا۔ جب آپ پارٹی کے ادھیکش تھے، تب بھی ہماری ملاقات ہوتی تھی، جب آپ منتری بنے، تب بھی ہماری بات ہوتی تھی اور وائس پریزیڈینٹ بننے سے پہلے جب آپ پارلیمنٹری افئیرس منسٹر تبے اور میں ایل او پی تھا، تب بھی ہمارا رابطہ رہا ہے۔ پھر بھی چئیرمین کے طور مجھے آپ سے جس طرح کا آشیرواد، جس طرح کا پریم جس طرح کا پیار، جس طرح کی گائیڈینس ملی، اس کے لیے میں ہمیشہ آپ کا مقروض رہوں گا، دھنیوادی رہوں گا۔

مانیئے پردھان منتری جی، کئی دفعہ آپ کے ساتھ ٹوکا ٹوکی ہوئی، لیکن آپ نے کبھی بھی برا نہیں مانا۔ ایل او پی کے وقت میں آپ کی بڑی لمبی اسپیچیں ہوئیں، میری بھی ہوئیں۔ خاص طور پر راشٹرپتی جی کے خطاب کے اوپر جب بھی تقریر ہوتی تھی، ہم بھی ایل او پی کی ذمہ داری نبھاتے تھے، لیکن کبھی بھی ان باتوں کو آپ نے ذاتی طور پر اپنے خلاف نہیں لیا۔ آپ نے ہمیشہ پرسنل کونٹیکٹس کو اور پارٹی کی زمہ داری کو دور دور رکھا۔ کبھی عید ہو، دیوالی ہو یا برتھ ڈے ہو، برابر آپ نے اس کا دھیان رکھا اور کبھی بھی سب سے پہلے فون کرنے میں کمی نہیں کی۔ یا تو میری پارٹی پریزیڈینٹ، شریمتی گاندھی کا سب سے پہلے فون آتا تھا یا آپ کا آتا تھا، ان دو لوگوں کا تو خاص طور پر فون آتا ہی تھا۔ آپ نے ہمیشہ یہی کہا کہ اگر کبھی بھی اپنی اسٹیٹ کے بارے میں کچھ کام ہو یا دوسرا کچھ کام ہو، تو آپ مجھے بتانا۔

مجھے یاد ہے، جب میں راجیہ سبھا کا الیکشن لڑنے گیا، تو آپ نے مجھ سے کہا کہ بھائی، آپ کو بھی الیکشن لڑنے کی کوئی ضرورت ہے؟ اس وقت میں نے کہا، یہ تو لڑائی ہے، یہاں آپکا کینڈیڈیٹ بھی ہے اور میں بھی ایک کینڈیدیٹ ہوں، اس لیے اس میں آپ کا کچھ نہیں کر سکتے۔ اس طرح آپس مین جو ایک پرسنل ٹچ ہوتا ہے، اس سے آدمی بھاؤک ہوجاتا ہے، سینٹی مینٹل ہوجاتا ہے، اموشنل ہوجاتا ہے۔ وِپکش کے ساتھ میرا رابطہ آج سے نہیں ہے، پہلی دفعہ جب میں ایم او ایس بنا تھا، تب سے لیکر آج تک میں سب کے رابطے میں رہا ہوں۔ ہم ملکر ہی اس دیش کو چلا سکتے ہیں، لڑائی کرکے یا گالیاں دیکر نہیں چلاسکتے۔

ہم اپنی بات اپنی تقریروں کے ذریعہ کرسکتے ہیں۔ میں آپ کا بہت دھنیواد کرتا ہوں۔ مانیئے ڈپٹی چئیرمین صاحب یہاں میرے بیچمیٹ رہے، وہ ہمیشہ مجھے یاد رہے گا۔ وہ بہت سِمپل آدمی ہیں، اسٹریٹ فارورڈ ہیں۔ کبھی کبھی ہم اسٹریٹ فارورڈ سے ناراض ہوتے ہیں، اسٹریٹ فارورڈ سے لوگ ہمیشہ ناراض ہوتے ہیں۔ شرد پوار جی سے لیکر، یادو جی سے لیکر ہمارے لیڈروں کا میں بہت دھنیواد کرتا ہوں۔ لیفٹ، رائٹ اینڈ سینٹر کے سب ممبروں کا اگر میں نام لونگا تو بہت سارے ہمارے ساتھی ناراض ہونگے تو چئیرمین صاحب سےلیکر، پردھان منتری جی سے لیکر میں سکریٹری جنرل صاحب اور سکریٹریئیٹ کا کیسے دھینواد کرسکتا ہوں، کرنا مشکل ہے، کیوں کہ ہمیشہ اور ہر وقت ان کا سہیوگ ملا، جب بھی ہم نے پارلیمنٹ کی کچھ انفارمیشنس چاہیں یا کوآرڈی نیشن کے بارے میں آپ تک پہنچنے کی بات کی،تو سکریٹری جنرل صاحب نے اور سکریٹریئیٹ نے ہمیشہ ہماری مدد کی ہے۔

آخر اس شعر کے ساتھ میں آپ سے ودائی لیتا ہوں۔ انشاآللہ ہم ملتے رہیں گے، چاہے یہاں نہیں ملیں، لیکن ہم ایک دوسرے کے پاس آ جاسکتے ہیں؎
نہیں آئے گی یاد تو برسوں نہیں آئے گی،
مگر جب یاد آؤگے تو بہت یاد آؤ گے

श्री सभापति: धन्यवाद गुलाम नबी जी।